अध्याय 49

याकूब के आशीर्वाद और उसकी मृत्यु

कुलपतियों के द्वारा दिए गए आशीर्वाद स्वाभाविक रूप से नबूवतीय थे, उनमें दिव्य प्रकाशन थे कि वास्तव में क्या होने वाला है। जैसे याकूब ने अपने जीवन से कूच करने से पहले अपने पोतों को आशीर्वाद दिए, उसने अच्छी और बुरी बातों के मिश्रण को प्रस्तुत किया।

पुत्रों के लिए याकूब के मृत्यु शय्या आशीर्वाद (49:1-27)

सुनने के लिए एक आह्वान (49:1, 2)

[1]फिर याकूब ने अपने पुत्रों को यह कहकर बुलाया, कि इकट्ठे हो जाओ, मैं तुम को बताऊंगा, कि अन्त के दिनों में तुम पर क्या क्या बीतेगा। [2]हे याकूब के पुत्रों, इकट्ठे हो कर सुनो, अपने पिता इस्राएल की ओर कान लगाओ।

आयत 1. अपनी मृत्यु शय्या से, **याकूब ने अपने पुत्रों को** अन्तिम बार **बुलाया।** वह प्रत्येक को सुनिश्चित आशीर्वाद देना चाहता था। उसने फ़िरौन को (47:7, 10), यूसुफ़ को (48:15) और एप्रैम और मनश्शे (48:20) को पहले ही आशीर्वाद दे दिया था। अब उसके पुत्र बाकी रह गए थे (49:3-27)। उसने उन्हें अपने पास **इकट्ठे** होने के लिए कहा ताकि वह उन्हें बता सके कि आने वाले दिनों में **क्या क्या क्या बीतेगा**। इब्रानी अभिव्यक्ति בְּאַחֲרִית הַיָּמִים *(बे आचारित हय्यामीम)* जिसका शाब्दिक अर्थ है "अन्त के दिनों में" लिखा या "आने वाले समय में" जैसा कि गिनती 24:14 में लिखा है। परन्तु KJV उपरोक्त वाक्यों को इस तरह दर्शाता है: "अन्तिम दिनों में" और "बाद के दिनों में।" यह वाक्य कई बाइबल विद्यार्थियों को यह सोचने की ओर ले गए कि यह बाइबल अंश मसीह के दोबारा आगमन की घटनाओं के अन्त समय को दर्शाते हैं, परन्तु यह एक गम्भीर धर्मवैज्ञानिक गलती है। इब्रानी अभिव्यक्ति मात्र भविष्य में अनिश्चित काल को दर्शाती है जब याकूब के वंशज कनान देश में बसेंगे। दाऊद, यहूदा का वंशज, उसके हाथ में "राजदण्ड" होगा और वह "लोगों पर" राज्य करेगा (अन्यजातियों पर; 49:8-10)। गिनती 24:14-19 में "मुख्य" बाइबल अंश भी दाऊद की ओर संकेत करते हैं, जिसे "राजदण्ड" लेना था, उसके सैनिक कौशल को मोआबियों को दबाने ओर एदोमियों को हराने के द्वारा प्रकट किया। इस कारण से, इब्रानी

अभिव्यक्ति का अनुवाद करना बेहतर है "आने वाले समय में" (देखें NIV; NRSV; NEB)।

आयत 2. जब **याकूब** ने कहा कि उसके पुत्र उसके पास आकर एकत्र हो जाएँ और उसकी सुनें, वह उन्हें मृत्यु शय्या आशीर्वाद देना चाहता था। मध्य पूर्वी देशों में इस तरह के वचन बहुत ही महत्वपूर्ण होते थे। वर्तमान कालिक उत्पत्ति पाठक अक्सर व्याकुल हो जाते हैं क्योंकि याकूब के कुछ पुत्र शापित हुए इसके बजाए कि वे अपने पिता के द्वारा आशीषित होते जो उनके पिता ने उनसे कहा, भले ही पद 28 बताता है कि प्रत्येक पुत्र को उसकी योग्यता के अनुसार "आशीषित किया" गया। "आशीर्वाद" בְּרָךְ *(बराक)* एक आधारभूत शब्द था जिसमें या अनोखे आशीर्वाद होंगे या भयंकर श्राप। इसलिए, याकूब ने उनसे कहा, **अपने पिता इस्राएल की ओर कान लगाओ।** कुलपति के अन्तिम वचन न्यायसंगत थे और उनके लिए और उनकी भावी पीढ़ी के लिए महत्वपूर्ण थे। यदि उसने भविष्य में हज़ारों वर्ष के बाद होने वाली घटनाओं के लिए नबूवत की होती तो उसके वचनों का उसकी अपनी पीढ़ी के लिए कोई अर्थ नहीं रह जाता। इसके विपरीत, याकूब के अन्तिम आशीर्वाद के वचन उसके पुत्रों के लिए बहुत महत्वपूर्ण थे क्योंकि उन में से कुछ के लिए बुरी बातें (श्राप) और कुछ लिए भली बातें (सार्थक आशीर्वाद) थे, प्रत्येक व्यक्ति के व्यवहार और चरित्र के आधार पर। उन में से कुछ "आशीर्वाद" मुख्य रूप से वर्तमान काल के वंश के लिए थी, जबकि अन्य वर्तमान और भविष्य के वंशज को समेटे हुए थे, जो मिस्र देश को छोड़ेंगे और अब्राहम के लिए परमेश्वर की प्रतिज्ञा के अनुसार प्रतिज्ञा के देश में बसेंगे (15:13-21)।

लिआ के पुत्र (49:3-15)

3"हे रूबेन, तू मेरा जेठा, मेरा बल, और मेरे पौरुष का पहिला फल है;
प्रतिष्ठा का उत्तम भाग, और शक्ति का भी उत्तम भाग तू ही है। 4तू जो जल की
नाईं उबलने वाला है, इसलिए औरों से श्रेष्ठ न ठहरेगा; क्योंकि तू अपने पिता की
खाट पर चढ़ा, तब तू ने उसको अशुद्ध किया; वह मेरे बिछौने पर चढ़ गया।
5शिमोन और लेवी तो भाई भाई हैं, उनकी तलवारें उपद्रव के हथियार हैं। 6हे
मेरे जीव, उनके मर्म में न पड़, हे मेरी महिमा, उनकी सभा में मत मिल; क्योंकि
उन्होंने कोप से मनुष्यों को घात किया, और अपनी ही इच्छा पर चलकर बैलों
की पूंछें काटी हैं। 7धिक्कार उनके कोप को, जो प्रचण्ड था; और उनके रोष को, जो
निर्दय था; मैं उन्हें याकूब में अलग अलग और इस्राएल में तित्तर बित्तर कर दूंगा।
8हे यहूदा, तेरे भाई तेरा धन्यवाद करेंगे, तेरा हाथ तेरे शत्रुओं की गर्दन पर
पड़ेगा; तेरे पिता के पुत्र तुझे दण्डवत करेंगे। 9यहूदा सिंह का डांवरू है। हे मेरे
पुत्र, तू अहेर करके गुफ़ा में गया है: वह सिंह वा सिंहनी की नाईं दबकर बैठ
गया; फिर कौन उसको छेड़ेगा। 10जब तक शीलो न आए तब तक न तो यहूदा से
राजदण्ड छूटेगा, न उसके वंश से व्यवस्था देनेवाला अलग होगा; और राज्य
राज्य के लोग उसके अधीन हो जाएंगे। 11वह अपने जवान गदहे को दाखलता में,

और अपनी गदही के बच्चे को उत्तम जाति की दाखलता में बान्धा करेगा; उसने अपने वस्त्र दाखमधु में, और अपना पहिरावा दाखों के रस में धोया है। 12उसकी आंखे दाखमधु से चमकीली और उसके दांत दूध से श्वेत होंगे। 13जबूलून समुद्र के तीर पर निवास करेगा, वह जहाज़ों के लिए बन्दरगाह का काम देगा, और उसका परला भाग सीदोन के निकट पहुंचेगा। 14इस्साकार एक बड़ा और बलवन्त गदहा है, जो पशुओं के बाड़ों के बीच में दबका रहता है। 15उसने एक विश्रामस्थान देखकर, कि अच्छा है, और एक देश, कि मनोहर है, अपने कन्धे को बोझ उठाने के लिए झुकाया, और बेगारी में दास का सा काम करने लगा।

रूबेन (49:3, 4)

आयतें 3, 4. पहला आशीर्वाद वास्तव में श्राप था, 9:25 में नूह के कथन के अनुरूप। एक बार फिर, पाप ने पहलौठे पुत्र के विशेषाधिकार की हानि को सहा (जैसे कैन, इशमाएल, एसाव और एर के साथ हुआ)। याकूब ने उस आदर और प्रतिष्ठा पर ध्यान देना आरम्भ किया जो **रूबेन** के **जेठा** होने के नाते उसके थे, जो अपने पिता के लिए बड़े आनन्द को लाया था। उस में, कुलपति ने अपना **बल** और **पहली शक्ति** (उसकी प्रजनन शक्ति) लगाई थी (व्यव. 21:17; भजन 78:51)। इसलिए वह उत्कृष्ट, बल के रूप में **बड़ी प्रतिष्ठा** थी और उच्च बल था, इसके साथ ही साथ पिता की सम्पदा का दोगुना अधिकारी।

परन्तु, रूबेन का चरित्र अनुशासनहीन और **जल की तरह अनियन्त्रित** था। इसलिए उसने, अपनी **प्रतिष्ठा** को अपने **पिता की खाट पर** चढ़ने के द्वारा खोया और उसने बिल्हा, याकूब की रखैल के साथ कुकर्म किया था (35:22)। शर्मनाक तरीके से, रूबेन ने कौटुम्बिक व्यभिचार के पाप के साथ अपने पिता की खाट को भ्रष्ट करने के द्वारा अपने आदर के पद का अपमान किया। यह कार्य के करने के द्वारा, उसने अपने पहलौठे के अधिकार को और परिवार में प्रधानता की पद को खो दिया (1 इतिहास 5:1, 2) और याकूब के दण्ड को अर्जित किया। जब इस्राएली प्रतिज्ञा के देश में बसने लगे, रूबेन के वंश को यरदन नदी के पूर्व की ओर स्थान दिया गया (यहोशू 13:15-23)। उन्होंने "इस्राएल के गोत्रों में. तुच्छ स्थिति के लिए छोड़े जाने के परिणामों के कष्टों को लिया।"[1]

शिमोन और लेवी (49:5-7)

आयत 5. शिमोन और लेवी भाई हैं यह कहने के द्वारा, याकूब मात्र यह नहीं बता रहा था कि वे सगे भाई है। इसके बजाए, वह इस बात पर ज़ोर दे रहा था कि वे सहयोगी या अपराध में साथ देनेवाले थे। उन्होंने सामान्य हित के लिए अपनी **तलवारों** को **उपद्रव के हथियार** के रूप में प्रयोग किया: शकेम के लोगों के घात का भयावह अपराध (34:25-30)।

आयत 6. उनके हत्या के कार्य ने याकूब के **मन** נֶפֶשׁ *(नेपेश)* "जीव/प्राण"[2] को बहुत दुःख दिया कि वह **उनकी सलाह** से दूर रहना चाहता था और अपने **वैभव** כָּבוֹד *(कबोद)*, "जीवन" या "आंतरिक मनुष्य"[3] को उनकी संगति से नहीं

जुड़ने दिया। इन दो पुत्रों का विश्वासघात याकूब की समझ से बाहर था: **अपने क्रोध में उन्होंने शकेम के लोगों को घात कर दिया था** क्योंकि एक व्यक्ति ने उनकी बहन दीना के साथ कुकर्म किया था (34:2, 25-31)। याकूब उनके इस व्यवहार से बहुत ही नाखुश था कि वह ऐसा दिखाई देता है वह उनके साथ किसी भी प्रकार का बर्ताव नहीं रखना चाहता था।

शिमोन और लेवी का क्रोध शकेम वासियों को घात करने से भी ठण्ड नहीं हुआ था; अपनी **मनमानी** और क्रोध में उन्होंने शकेम के लोगों के बैलों की पिछले पैरों की नसों को काटने से उनको **पंगु बना दिया** था। ऐसा कार्य अक्सर लड़ाई में जीतने वालों के द्वारा किया जाता था इससे उनके शत्रुओं के घोड़े लड़ाई में रथ नहीं खींच सकते थे। परन्तु शकेमवासी उनके शत्रु नहीं थे; वे याकूब के परिवार के साथ शान्ति की सन्धि की वाचा के लिए सहमत हुए थे (34:6-24)। इसलिए, सामूहिक हत्या के बाद भाई, बैलों का बल और उपयोग-क्षमता को नाश करने के कार्य के द्वारा अनुचित कृत्यों में शामिल हो गए।

आयत 7. याकूब ने इन पुत्रों को **धिक्कारा** क्योंकि उनका **कोप प्रचण्ड** था, और **रोष निर्दयी**। परमेश्वर की ओर से बोलनेवाला (भविष्यद्वक्ता[4]) होने के नाते, उसने उन पर यह आज्ञा दी: **मैं उन्हें याकूब में अलग अलग और इस्राएल में तितर बितर कर दूंगा।** यह भविष्यवाणी सैकड़ों वर्ष आगे के लिए थी, जब इस्राएली कनान देश में बसेंगे। जो भूमि शिमोन को दी थी, वह यहूदा को दी गई भूमि की सीमाओं में थी (यहोशू 19:1-9)। क्योंकि मूसा की आशीष (व्यव. 33) में शिमोन के वंशजों का उल्लेख नहीं है और इसके बाद उनके गोत्र का पुराने नियम में बहुत कम ही उल्लेख आता है, अतः संभव है कि यहूदा के गोत्र में विलय होने से अपनी पृथक पहचान जाती रही हो। लेवी याजकीय गोत्र बने; उन्हें शेष गोत्रों में बिखरे हुए अड़तालीस नगर दिए गए (यहोशू 21:1-42), परन्तु उन्हें शेष इस्राएलियों से अलग कोई भूमि का भाग नहीं दिया गया (यहोशू 13:14, 32, 33)।

यहूदा (49:8-12)

आयत 8. यहूदा लिया का चौथा पुत्र था और याकूब का भी चौथा पुत्र था। जब उसका जन्म हुआ, उसकी माता ने उसका नाम रखते हुए कहा, "मैं यहोवा का धन्यवाद करूंगी" (29:35)।[5] यहूदा के आरंभिक जीवन में वह याकूब का यूसुफ़ से द्वेष रखने वाला पुत्र था और उसने ही अपने भाइयों को परामर्श दिया था कि वे उसे दासत्व में बेचकर कुछ रुपया कमा लें (37:26-28)। उसने अपनी पुत्रवधू, तामार के साथ यौन संबंध भी रखे थे, जिसे उस समय उसने वेश्या समझा था (38:12-26)। लेकिन यहूदा ने अपने आप को याकूब और अपने भाइयों की दृष्टि में सही ठहरा लिया जब उसने बिन्यामीन के स्थान पर मिस्र में दास बनकर रहना स्वीकार किया जिससे वह स्वतंत्र होकर अपने पिता के पास घर, कनान चला जाए। यहूदा जानता था कि याकूब कभी यूसुफ़ की हानि से उभर नहीं पाया था; अब यदि वह बिन्यामीन को भी खो देता, तो अवश्य ही उसका हृदय टूट जाता और उसकी मृत्यु हो जाती (44:18-34)। इस बात के

कारण, याकूब को एहसास हो गया कि यहूदा अब परिपक्व हो कर ऐसा व्यक्ति हो गया है जो उसके परिवार का नेतृत्व कर सके और उसके वंशजों के लिए सही नेतृत्व का उदाहरण रख सके। इसलिए यहूदा के वंशज वाचा किए हुए देश में सबसे महत्वपूर्ण और सबसे बड़ा गोत्र बन गया।

पहले तीन पुत्रों को छोड़कर, वृद्ध कुलपति ने जन्माधिकार में प्रभुत्व का अधिकार अपने चौथे पुत्र यहूदा को दिया। वह अपने भाइयों और उनके वंशजों पर अगुवा होगा। यहूदा की इस नियुक्ति का उसके भाइयों को अनुमोदन करना था, जो उसका **धन्यवाद** करते क्योंकि उसका **हाथ** उसके **शत्रुओं की गर्दन** (עֹרֶף, *ओरेफ़)*[6] पर पड़ेगा। बाइबल के वृतांत का कोई भी भाग यह नहीं दिखाता है कि यहूदा ने व्यक्तिगत रीति से यह भूमिका निभाई हो, परन्तु यह आशीष यहूदा से कहीं अधिक आगे तक गई, उसके वंशजों के दूरगामी भविष्य तक। वह समय आना था जब यहूदा के वंशज अपने शत्रुओं को पराजित करते, जो बचकर भागते उनका पीछा करते, उन्हें पीछे से जा पकड़ते,[7] और उनका सफाया कर देते। बाद के बाइबल के वृतांत कनान की विजय में यहूदा के गोत्र की निर्णायक भूमिका (न्यायियों 1:1-21) और अपने शत्रुओं पर दाऊद की अनेकों विजयों[8] के बारे में बताते हैं। जब शेष गोत्रों ने दाऊद (यहूदा का वंशज) को राजा स्वीकार कर लिया, तो याकूब के पुत्रों (वंशजों) ने सांकेतिक रूप में वही किया जो उनके लिए निर्धारित था: उन्होंने उसके महान वंशज दाऊद के स्वरूप में, यहूदा के सामने **दण्डवत किया** (देखें 2 शमूएल 5:1-5)।

आयत 9. इस बिंदु पर आकर, लेखक का वर्णन भविष्य में होने वाले यहूदा के कार्यों तथा उसके भाइयों की प्रतिक्रिया से हटकर एक **सिंह** के प्रतीक होने की ओर आता है। सिंह सबसे भयावह जानवरों में से एक है, और यहूदा की बढ़ोतरी या विकास की तुलना सिंह के नवजात शावक से की है। पहले वह शावक छोटा और निर्बल होता है; परन्तु, समय के साथ, वह बढ़कर पूर्ण-विकसित नर हो जाता है जो संबंध बनाकर सिंहों के अपने ही दल (परिवार) पर राज्य करता है।

यह संयोगवश नहीं था कि प्राचीन संसार में सिंह, जिसे बहुधा जानवरों का राजा कहा जाता था, अगुवा होने का प्रतीक बन गया। मूसा की आशीष में, गाद और दान के गोत्रों को सिंह के रुप में दिखाया गया है (व्यव. 33:20-22)। यरूशलेम में राजाओं, जैसे कि सुलेमान और उसके उत्तराधिकारियों, के पास सिंहों की प्रतिमाएं होती थीं जो उनके सिंहासन तक और सिंहासन के साथ खड़ी होती थीं (1 राजा 10:18-20)। यहूदियों के बाद के इतिहास में, भविष्यद्वकताओं ने परमेश्वर के लोगों के कुछ राजाओं को सिंह कह कर संबोधित किया (यहेज. 19:1-9; सप. 3:3)। लेकिन अब्राहम के वंशजों में व्यक्तिगत रीति से सिंह के प्रतीक का सबसे आरंभिक प्रयोग, मृत्युशैया से यहूदा और उसके वंशजों को दी गई इस आशीष में है, जो संभवतः दाऊद की ओर संकेत करती है।

प्रथम, **यहूदा** (व्यक्ति) को **सिंह का डांवरू** (शावक) कहा गया है जो बढ़कर जवान सिंह बन गया (यहूदा के गोत्र का विकसित होना) और अपने अहेर (वाचा किए हुए देश के दक्षिणी भाग में रहने वाले कनानी) पर क्रूरता से हमला किया,

कनान की विजय के भाग के रूप में। फिर उसे एक सबल और परिपक्व सिंह (दाऊद के नेतृत्व में, यहूदा का गोत्र), कहा गया जो अपनी **मांद में लौट आया**। जहाँ वह सिंह के समान बैठ गया। वहाँ वह अपने अगले अहेर की प्रतीक्षा कर रहा है, परन्तु **उसे उसको छेड़ने** का साहस किसी में नहीं है।[9] इस चित्रण की परिपूर्णता में, दाऊद ने हेब्रोन में, यहूदा पर 7½ वर्ष राज्य करते हुए संयम के साथ प्रतीक्षा की, जब तक कि उत्तरी गोत्रों ने उससे उन पर भी राज्य करने को नहीं कहा, संयुक्त राज्य के भाग के रूप में (2 शमूएल 5:1-5)। इस प्रकार दाऊद वह राजा बना जिसने इस्राएल के सभी बारहों गोत्रों (याकूब के वंशजों) पर राज्य किया।

आयत 10. यहाँ, याकूब की भविष्यवाणी अपनी चरम सीमा पर पहुँचती है। जैसा उसने यहूदा के राज्य अधिकारी वंशज का वर्णन किया, लेखक ने एक **राज दण्ड** का उल्लेख किया जो **यहूदा से नहीं छूटेगा**। न ही उसके **पैरों के बीच से** शासक की छड़ी जाएगी। ये निकट पूर्व में, राज्य अधिकार के प्रकट चिन्ह थे, जैसा कि अनेकों प्राचीन नक्काशियों में देखा जाता है।[10] निःसन्देह ये दाऊद के राज वंशजों की ओर संकेत करते हैं (देखें गिनती 24:17-19; भजन 45:1, 6, 7), जिन्होंने इस्राएलियों (याकूब के वंशजों) पर, उनके सबसे अच्छे वर्षों में (देखें 2 शमूएल 7:8-16; भजन 2:7-9; 89:3, 4) शासन किया। आयत 10 का बाद का भाग टीकाकारों के लिए पहेली है। शीलो के अनुवाद और तात्पर्य भिन्न हैं (देखें *अतिरिक्त अध्ययन के लिए: "शीलो" का अर्थ* 134-36 में)। परन्तु फिर भी तात्पर्य यह है कि यहूदा के वंश के राजा लोगों की आज्ञाकारिता का अधिकार रखेंगे।

आयतें 11, 12. यहूदा का राजकीय वंशज, दाऊद, शान्तिः और बहुत समृद्धि का आनन्द लेगा, जिसे प्रतीक के रूप में **वह अपने जवान गदहे को दाखलता में, और अपनी गदही के बच्चे को उत्तम जाति की दाखलता में बान्धा करेगा** कहा गया है। न्यायियों की सन्तान के लिए गदहा परिवहन का नियमित माध्यम था (न्यायियों 10:3, 4; 12:14) और इस्राएल के आरंभिक राजाओं की सन्तान के लिए भी (2 शमूएल 16:2; 19:24-26)।[11] जब कोई राजा गदहे पर सवार होकर शहर में प्रवेश करता था तो यह शान्तिः और समृद्धि का चिन्ह होता था (ज़कर्याह 9:9; मत्ती 21:1-5)। परन्तु फिर भी कोई मूर्ख ही गदहे को मूल्यवान दाखलता के साथ बाँधता; वह जानवर न केवल दाख, वरन पूरी दाखलता को भी खा लेता। इसलिए समृद्धि का यह चित्रण, दिखाता है कि गदहे का बच्चा भी अत्यंत विलासिता का सुख ले रहा है।

याकूब की बढ़ा-चढ़ाकर कही गई आशीषें और आगे गईं, और उसने यहूदा के विशेष वंशज को इतना समृद्ध चित्रित किया कि **वह अपने वस्त्र दाखमधु में धो पाता**। वह इतनी बहुतायत की फसल और दाखमधु का इतनी बहुतायत के भण्डार का सुख पाएगा कि वह **अपने पहरावे को दाखों के रस में धो सकेगा**। दाख की उसकी फसल और उन से बनने वाला दाखरस इतना अधिक होगा कि उसकी **आँखें** दाखमधु से **प्रभावित** [חַכְלִילִי, *चकलिली*] होंगी। इसका यह अर्थ

प्रतीत होता है कि उसकी आँखें "रक्तमय," या "लाल"[12] तथा बहुत दाखमधु पीने से उसकी दृष्टि धुँधली हो जाएगी।[13] यहाँ NIV भी यही तात्पर्य रखता है; परन्तु इब्रानी अभिव्यक्ति को "दाखमधु से गहरे रंग का" कहती है। इससे यह प्रतीत होता है कि गहरे लाल रंग के दाखमधु को पीने से उसकी आँखें दाखमधु से भी अधिक गहरी "लाल" (KJV; RSV) हो जाएंगी। उसकी बहुतायत की समृद्धि के संबंध में अन्तिम बढ़ा-चढ़ाकर कहा गया दावा था कि उसके **दाँत दूध से श्वेत होंगे।** क्योंकि सामान्यतः दूध दाँत श्वेत करने के लिए नहीं जाना जाता है, इसलिए इससे अधिक अच्छा स्पष्टीकरण होगा, "उसके लाल रंग लिए होंठों की तुलना में उसके दाँत दूध से भी अधिक श्वेत चमकेंगे।"[14]

जबूलून (49:13)

आयत 13. किसी कारण से, याकूब ने यहाँ जन्म के क्रम को पलट दिया; उसने लिया के पाँचवें पुत्र (देखें 49:14, 15), इस्साकार को छोड़ कर, अगली आशीष उसके छठे पुत्र, **जबूलून** को दी। अचरज की बात है कि, दोनों स्थानों पर, यहाँ एवं मूसा की आशीषों में (व्यव. 33:18), जबूलून का नाम उसके भाई इस्साकार से पहले आया है जो दिखाता है कि जबूलून को वर्चस्व दिया गया था। बाद में इसकी पुष्टि हुई, जब यहोशू ने भूमि के बंटवारे के लिए "यहोवा के सामने" चिट्ठी डाली (यहोशू 18:6) और एक बार फिर जबूलून को इस्साकार पर प्राथमिकता मिली (यहोशू 19:10-23)। दोनों में से जबूलून का गोत्र अधिक समृद्ध और शक्तिशाली था।

जबकि याकूब की आशीष कहती है कि जबूलून **समुद्र के तीर पर निवास** करेगा और **समुद्री जहाज़ों के लिए बन्दरगाह होगा**, इस गोत्र को दिया गया भू-भाग भूमध्यसागर तक नहीं गया (यहोशू 19:10-16)। इसके स्थान पर आशेर के गोत्र को जबूलून के पश्चिम में समुद्र तट के साथ की भूमि दी गई (यहोशू 19:24-31)। इब्रानी भाषा के पूर्वसर्ग ל (*l*^{e}) के अनेकों अर्थ हैं, इसलिए याकूब की भविष्यवाणी में जबूलून को समुद्र तट "पर," "साथ" (NIV), या "निकट"[15] कहा जा सकता है। वास्तविक परिस्थिति में जबूलून के लिए समुद्र तट पर ऊपर और नीचे जाने वाले समुद्री जहाज़ों द्वारा व्यापार करना बहुत अनुकूल था क्योंकि किशोन नदी एस्द्राएलोन के मैदान से होकर, जो जबूलून के दक्षिणपश्चिमी कोने और आशेर की दक्षिणी सीमा पर था, जाती थी जहाँ से फिर वह भूमध्यसागर में खाली हो जाती थी। यह समुद्र और एक्को बन्दरगाह, जो कि अधिक उत्तर में नहीं था, के लिए प्रमुख मार्ग था। परन्तु यदि जबूलून के व्यापारी सीधे पश्चिम की ओर समुद्र को जाना चाहते तो आशेर के बाहर से घूम कर जाने की बजाए, वे वही कर सकते थे जो अन्य भीतरी भू-भाग में रहने वाले गोत्र करते थे: अपने सामान के अन्य लोगों के भू-भाग पर से जाने की कीमत चुकाते। इस प्रकार से, जबूलून, जिसकी **बगल** (उत्तरी पश्चिमी सीमा) **सीदोन** की ओर थी, वह "बन्दरगाह" होता जो "समुद्री जहाज़ों" से व्यापार को बढ़ावा देता।

कुछ का मानना है कि "सीदोन" के हवाले का तात्पर्य है कि जबूलून के पुरुष

सीदोनी जहाज़ों पर, जो सीदोन की बन्दरगाह से पलायन करते थे, दास का काम करते थे। यद्यपि दोनों, जबूलून और इस्साकार के वंशजों के लिए यह एक संभावना है (49:15), जबूलून के पुरुष अपने भाइयों से बहुत भिन्न थे: अधिकांशतः वे बलवान, साहसी और उद्यमी प्रतीत होते थे। वे ऐसे लोग थे जो अपनी तथा अपने सामान की रक्षा कर सकें; उन्हें धोखा देना, हराना या बल पूर्वक दासत्व में लाना सरल नहीं था। मूसा की आशीष में इसके समानन्तर एक पद से लगता है कि जबूलून के पुरुषों में ऐसे गुण थे कि वे "समुद्र के धन" (व्यव. 33:19) को निकाल सकते थे। इस विषय में NIV इस विचार को और भी अधिक बलवन्त शब्दों में व्यक्त करती है, यह कहकर कि वे "समुद्र की बहुतायत पर दावत करते।" इसका तात्पर्य है कि वे व्यापार के अवसरों का लाभ उठाते, न कि ऐसे ही निष्क्रिय होकर खड़े रहते या अपने आप को सीदोनी जहाज़ों पर दास के रुप में परिश्रम के लिए ले लिए जाने देते। बलवान व्यापारी होने के कारण, वे अपने भाग्य को स्वयं नियंत्रित करते और समुद्र से जो बहुतायत वे प्राप्त करते उसका आनन्द लेते।

अन्य परिच्छेद इसकी पुष्टि करते हैं कि जबूलून के लोग बलवान और साहसी योद्धा थे। उन्होंने कनानियों से युद्ध लड़कर अपने लिए नाम कमाया था, और दबोरा के गीत में उनकी प्रशंसा "अपने प्राण पर खेलने वाले लोग" कहकर हुई है (न्यायियों 5:18)। यही गुण गिदोन के समय में भी देखे जाते हैं, जब - इस्साकार के अपने भाइयों की तुलना में - जबूलून के लोगों ने अन्य इस्राएलियों के साथ मिलकर मिद्यानियों को पराजित किया (न्यायियों 6:35)। अन्ततः जब सभी गोत्र दाऊद के पास हेब्रोन में संगठित राष्ट्र के रूप में उसके प्रति निष्ठा दिखाने के लिए एकत्रित हुए, तब जबूलून के गोत्र से उसकी सेना में सबसे अधिक पुरुषों का योगदान दिया गया (1 इतिहास 12:23-40)। जबूलून के पचास हज़ार योद्धा अनुभवी भी थे और समर्पित भी तथा वे "चंचल न थे" (1 इतिहास 12:33)।

इस्साकार (49:14, 15)

आयतें 14, 15. इस्साकार लिया का पाँचवाँ और याकूब का नौवाँ पुत्र था (30:14-18)। उससे आने वाले गोत्र की न्यायियों में अधिकांशतः उपेक्षा की गई है। कनानियों के विरुद्ध युद्धों तथा गोत्रों के विवरण में (न्यायियों 1), इस्साकार का उल्लेख भी नहीं है। परन्तु हम एक हवाला पाते हैं जिसमें इस्साकार के पुरुष दबोरा और बाराक के साथ सीसरा तथा उसकी सेना के विरुद्ध युद्ध में थे (न्यायियों 5:15)। उस अवसर पर परमेश्वर ने किशोन नदी की तराई को बाढ़ से भर दिया, जिससे कनानियों को अपने नौ सौ लोहे के रथों को त्याग देना पड़ा। इसके बाद सीसरा की सेना को इस्राएलियों ने सरलता से पराजित कर दिया (न्यायियों 4:1-5:31), परन्तु लेख इस बात पर मौन है कि उस विजय में इस्साकार के पुरुषों की क्या भूमिका थी।

न्यायियों के अनुसार, इस्साकार के पुरुषों ने गिदोन के साथ मिद्यानियों, अमालेकियों और पूर्व के लोगों के साथ युद्ध में बिलकुल भाग नहीं लिया। इन

हमलावरों ने यरदन को पार किया और यिज्रेल की तराई में इस्साकार के कबायली इलाकों पर हमला किया (न्यायियों 6:33; देखें यहोशू 19:17-23); फिर भी, अपने शत्रुओं द्वारा भूमि हथिया लिए जाने का प्रतिरोध करने की बजाए, लगता है कि उन्होंने उनके आगे समर्पण कर दिया। इसलिए जब बाद में गिदोन पर परमेश्वर का आत्मा आया, और उसने समस्त मनश्शे, आशेर, जबूलून, और नप्ताली को संदेशवाहक भेजकर लोगों को युद्ध के लिए बुलवा भेजा (न्यायियों 6:34, 35), परन्तु उसने इस्साकार के लोगों को बुलाने या उनकी भूमि की रक्षा करने का कोई प्रयास नहीं किया। हमलावरों का प्रतिरोध करने की बजाए, इस गोत्र ने स्वेच्छा से उन्हें समर्पण किया और उनके दास बन गए।

यह ऐतिहासिक जानकारी हमें याकूब की आशीष/श्राप की भविष्यवाणी को समझने में सहायता करती है कि **इस्साकार बलवंत गदहा** होगा परन्तु मनोहर देश में **अच्छा विश्राम स्थान देखकर पशुओं के बाड़ों के बीच दबका** रहा। यहाँ पर प्रयुक्त इब्रानी शब्द מִשְׁפְּתַיִם *(मिशपेथायिम)* दोहरा शब्द है जिसका अर्थ अनिश्चित है। इसे NASB ने "भेड़ शाला," और NEB ने "गउशाला" लिखा है। ये अनुवाद 49:14, 15 का अर्थ इस्साकार के लिए यरदन के पश्चिम में एक आदर्श, शांत विश्राम स्थान कहते हैं। उनके अनुसार 49:15 का अर्थ है कि इस गोत्र ने फिनीकियों को समर्पण किया, जिन्होंने उन से **बेगारी में दास का कार्य** (दासत्व) करवाया।[16]

इस के विपरीत, KJV, NIV, NAB, TEV, और अन्य आधिकारिक अनुवाद "मिशपेथायिम" का अर्थ "बोझ के थैले" या गदहों द्वारा उठाए जाने वाले अन्य "बोझ" बताते हैं। गदहा स्वभाव ही से बोझ उठाने वाला जानवर है, युद्ध के घोड़े के विपरीत जो युद्ध भूमि में रथ खींच सकता है या ऊँट जिस पर सवार योद्धा शत्रुओं पर हमला कर सकता है (न्यायियों 4:13-16; 6:5)। क्योंकि इस इब्रानी शब्द के अर्थ को लेकर विद्वानों में विवाद है, उसके अर्थ के लिए हम यहाँ पर निश्चित नहीं हो सकते हैं। लेकिन कम से कम गिदोन के युद्ध के संदर्भ में, इतना स्पष्ट है कि इस्साकार के गोत्र ने गदहे के समान होना चुन लिया, जो निष्क्रिय होकर अपने देश पर हमला करने वालों को समर्पण कर के, अपने बोझ के बीच लेट गया। अपने शत्रुओं के विरुद्ध युद्ध करने और परमेश्वर द्वारा वाचा के देश में विजय देने की प्रतिज्ञा पर विश्वास करने के स्थान पर, उन्होंने बस समर्पण करने और बने रहने को चुना, मानो वे अपने अन्य जाति मूर्तिपूजक स्वामियों के लिए बोझा ढोने वाले जानवर हों।

दासियों के पुत्र (49:16-21)

[16]"दान इस्राएल का एक गोत्र हो कर, अपने जाति भाइयों का न्याय करेगा। [17]दान मार्ग में का एक सांप, और रास्ते में का एक नाग होगा, जो घोड़े की नली को डंसता है, जिस से उसका सवार पछाड़ खाकर गिर पड़ता है। [18]हे यहोवा, मैं तुझ ही से उद्धार पाने की बाट जोहता आया हूं। [19]गाद पर एक दल चढ़ाई तो

करेगा; पर वह उसी दल के पिछले भाग पर छापा मारेगा। 20आशेर से जो अन्न उत्पन्न होगा वह उत्तम होगा, और वह राजा के योग्य स्वादिष्ट भोजन दिया करेगा। 21नप्ताली एक छूटी हुई हिरनी है; वह सुन्दर बातें बोलता है।"

दान (49:16-18)

आयत 16. याकूब का पाँचवाँ पुत्र, दान, राहेल की दासी, बिल्हा का पहला पुत्र था (30:5, 6)। कुलपति से, दासियों के पुत्रों में से आशीष पाने वाला, वह पहला पुत्र था। वास्तव में दान को आशीष दो भागों में मिली, पहले भाग में शब्दों का आलंकारिक प्रयोग हुआ: "**दान** [דָּן, *दान]* **इस्राएल का एक गोत्र हो कर अपने जाति भाइयों का न्याय** [דִּין, *दिन]* **करेगा।"** संज्ञा "दान" का अर्थ न केवल "न्याय" है परन्तु उसका अर्थ किसी "उद्देश्य के लिए निवेदन" करना या "निर्दोष ठहराना" भी है। यह नाम राहेल की मानसिक दशा को दिखाता है जब उसका जन्म हुआ। उसने कहा, "परमेश्वर ने मेरा न्याय चुकाया," और उसका नाम "दान" रखा (30:6)।

दान ने किस प्रकार अपने लोगों का न्याय किया (चुकाया)? क्योंकि परमेश्वर को अपने लोगों इस्राएल का न्याय चुकाने वाला कहा गया है (व्यव. 32:36; भजन 135:14; देखें भजन 72:2), कुछ लोगों का मानना है कि यहाँ "लोगों" का तात्पर्य इस्राएल राष्ट्र से है।[17] क्योंकि हम कभी दान के लिए नहीं पढ़ते हैं कि उसने सारे राष्ट्र का न्याय किया या चुकाया, इसलिए यह अधिक उपयुक्त लगता है कि भविष्यवाणी को उसी गोत्र के लोगों के लिए लागू समझा जाए। न्याय चुकाने का कुछ भाग फिलिस्तियों पर शिमशोन की विजय (न्यायियों 14-16) द्वारा हुआ, जिन्होंने दान के गोत्र पर चालीस वर्ष तक कठोर शासन किया (न्यायियों 13:1)।

आयत 17. याकूब ने आगे कहा कि **दान मार्ग में का एक सांप, रास्ते में का एक नाग होगा**, जो **घोड़े की नली को डंसता है**। इस से सवार **पछाड़ खा कर** गिर पड़ता है। विद्वानों ने पलिस्तीन में बीस प्रकार के भिन्न ज़हरीले सांपों की पहचान की है, जिन में से एक है "सींग वाला सांप," एक खतरनाक पीला वाइपर सांप। उसकी आँखों के ऊपर उभार होते हैं जो सींग के समान दिखते हैं; और वे चट्टानों में छिपे रहते हैं या रेत में घुस जाते हैं, इस प्रतीक्षा में कि उसे देखे बिना निकट से निकलने वाले जानवरों या मनुष्यों को डस लें। कुछ यहूदी टार्गम्स और अधिकांश मध्य कालीन यहूदी कॉमेन्ट्री शिमशोन को वह नाग बताती हैं जिसने यकायक ही फिलिस्तियों पर घातक बल के साथ वार किया।[18]

दान द्वारा यकायक वार का एक अन्य उदाहरण है लैश के विनाश की अरुचिकर कहानी। अपने आप को फिलिस्तियों के विरुद्ध देश के दक्षिणपश्चिमी भाग में बनाए नहीं रख पाने के कारण, दान के छः सौ जन, उत्तर की ओर चले कि गोत्र के बसने के लिए और कोई और अच्छा स्थान खोज सकें। वे कनान के सबसे उत्तरी भाग में बसे शान्तिप्रिय नगर लैश पहुँचे; और वहाँ, एक नाग के समान उन्होंने यकायक ही प्रहार किया, और वहाँ की सारी आबादी का संहार

करके नगर को जला डाला। बाद में, उन्होंने उस नगर को पुनः बसाया और याकूब के पुत्र, तथा अपने पूर्वज के नाम पर उस नगर का नाम "दान" रखा। उन्होंने वहाँ मूर्ति तथा अवैध याजक स्थापित किए (न्यायियों 18:1-30)। वे वहाँ 722 ई.पू. में अशूरियों के आने तक बने रहे, जो उन्हें उनके मूर्तिपूजा तथा अधर्म के कारण दासत्व में ले गए।

आयत 18. दान को दी गई आशीष के अन्त की ओर आते हुए याकूब ने यकायक ही परमेश्वर से एक छोटी सी प्रार्थना: **हे यहोवा, मैं तुझी से उद्धार पाने की बाट जोहता आया हूं।** यह याकूब की अभिव्यक्तियों में असाधारण है। क्या यह दान के महानतम नायक शिमशोन के बारे में भविष्यवाणी थी, जिसका अक्खड़पन उसे नैतिक तथा आत्मिक अवनति के मार्ग पर नीचे की ओर ले जाएगा जब तक कि उसका तथा हज़ारों फिलिस्तियों का नाश न हो जाए? संभवतः यह उस भय की अभिव्यक्ति थी कि दान के वंशज एक शान्तिप्रिय नगर (लैश) की आबादी की निर्मम हत्या के दोषी होंगे। मृत्यु शैया से दी गई आशीषें प्रमाण हैं कि याकूब को चिंता थी कि उसके पुत्र और उनके वंशज आगे चलकर क्या हो जाएंगे। जैसे जैसे कुलपति मृत्यु के निकट आ रहा था, बीते जीवन के पाप उसके सामने आ रहे होंगे। वह अपनी तथा अपने पुत्रों की निर्बलता से परिचित था; वह जानता था कि उन सबको परमेश्वर के अनुग्रह और उद्धार की आवश्यकता है।

गाद (49:19)

आयत 19. गाद लिआः की दासी ज़िल्पा का पहला, और याकूब का सातवाँ पुत्र था (30:10, 11)। इस आयत में उसके विषय में दिए गए संक्षिप्त वाक्य में इब्रानी में केवल छः शब्द हैं, जिनमें से तीन संज्ञा "गाद" पर शब्दों का आलंकारिक प्रयोग है। मूल इब्रानी शब्द גד *(गद)* के प्रयोग तथा उसमें अन्य अक्षरों को जोड़ कर, लेखक ने "चढ़ाई" शब्द के भिन्न रूपों को सम्मिलित कर लिया: **एक *दल चढ़ाई* तो करेगा; पर वह उसी दल के पिछले भाग पर *छापा* मारेगा** (ज़ोर दिया गया)। यहाँ NIV कहती है "गाद पर *हमलावरों* का दल *आक्रमण* करेगा, परन्तु वह उनकी ही एड़ियों पर *आक्रमण* कर देगा" (बल दिया गया)।

गाद का गोत्र यरदन की पूर्व में, कनान देश की भूमि के बाहर, बसा था। क्योंकि उनके पास कोई प्राकृतिक सीमा नहीं थी जो उन्हें उनके क्षेत्र में आने वाले शत्रुओं से पृथक रखती, इसलिए अपने गोत्र को मिले भू-भाग को बनाए रखने के लिए उन्हें बहुत कठिनाई रही। उनके दक्षिण में मोआबी थे, अम्मोनी पूर्व की ओर, तथा उत्तर पूर्व की ओर अरामी थे। गाद का उल्लेख मोआबी पत्थर में है (जो नौवीं शताब्दी ई.पू. का है), जहाँ मोआबी राजा मेशा, ने दावा किया कि उसने गाद के एक नगर अतारोथ पर कब्ज़ा कर के उसमें रहने वाले सारे लोगों को मार डाला। इस संहार का जो कारण दिया गया वह है कि ऐसा करने से उसके देवता कीमोश तथा मोआबी लोगों को संतुष्टि होगी।[19] क्योंकि गाद छोटा

गोत्र था इसलिए उन पर हमला करने वाले हमलावरों से बचाए रखने के लिए उन्हें कुशल योद्धा बनना पड़ा (1 इतिहास 12:8)। मूसा की आशीषों में उन्हें सिंह के समान क्रूर कहा गया है (व्यव. 33:20, 21)। उनकी मूलभूत युक्ति चालाकी और पीछे से यकायक आक्रमण करने की थी, इसीलिए याकूब की भविष्यवाणी में कहा गया कि वे अपने शत्रुओं की "एड़ी पर आक्रमण" करेंगे।

आशेर (49:20)

आयत 20. आशेर याकूब का आठवाँ पुत्र था और ज़िल्पा का दूसरा। लिया ने उसका नाम "आशेर" ("प्रसन्न") रखा था क्योंकि वह बहुत आनंदित थी कि उसकी दासी ने याकूब को एक और पुत्र दिया था (30:12, 13)। मृत्यु शैया से याकूब की भविष्यवाणी में आशेर के लिए कहा गया, **जो अन्न उत्पन्न होगा वह उत्तम होगा।** इसका तात्पर्य है कि उसके वंशज ऐसा गोत्र बन जाएंगे जो बहुत आशीषित होगा; कनान में उनका भाग उत्तर पश्चिम गलील की उपजाऊ भूमि होगा जिसका ढाल भूमध्य सागर तक जाएगा। मूसा की आशीष में आशेर का वर्णन "अपने भाइयों की कृपादृष्टि वाला" है। वह "अपना पाँव [जैतून के] तेल में डुबोएगा," अर्थात वह बहुत समृद्ध होगा और "बड़े आराम से" चलेगा (व्यव. 33:24, 25)।

समय के साथ, आशेर के वंशजों का आंकलन बाइबल के लेख में बहुत भिन्न रीति से हुआ। उनके आनंदमय और समृद्ध जीवन का एक अमंगल पहलू भी था जिसके कारण परमेश्वर के लोगों को गंभीर आत्मिक तथा राजनैतिक समस्याएं झेलनी पड़ीं। न्यायियों की पुस्तक के लेखक ने आशेर के गोत्र का उल्लेख अपमानजनक रीति से किया है, यह कहते हुए कि वे "कनानियों में बस गए" और "उन्हें निकाला नहीं" (न्यायियों 1:32)। उसने कई महत्वपूर्ण कनानी नगरों का भी उल्लेख किया है, साथ ही फिनीकी बन्दरगाहों का भी, जो संभवतः आशेर की उपज के निर्यात के केंद्र बन गए थे। प्रतीत होता है कि याकूब के ये वंशज विदेशियों के साथ समृद्ध व्यापार बनाए रखने के बारे में अधिक चिंतित थे न कि उन नैतिक और आत्मिक समझौतों के बारे में जिन को उन्हें अवश्य ही करना पड़ता। दबोरा के गीत में आशेर के लोगों की उनके निष्क्रिय रहने के लिए भर्त्सना की गई है। उन्हें एप्रैम के लोगों की सहायता करनी चाहिए थी जब सिसरा की कनानी सेना ने उन पर आक्रमण कर के उन्हें घेर लिया था (न्यायियों 4:13; 5:17)।

आशेर के लिए याकूब की भविष्यवाणी दो धारी तलवार थी: वह आशीष थी कि वे बहुतायत की भोजन सामग्री का आनन्द लेंगे; परन्तु उनके ये **राजकीय खाद्य पदार्थ** श्राप भी बन गए। कहने की इस विधि का तात्पर्य स्थानीय कनानी राजाओं तथा बन्दरगाह-राज्यों जैसे कि अक्को और सीदोन (न्यायियों 1:31) के साथ समृद्ध व्यापार से था। संक्षेप में, आशेर के वंशजों ने परमेश्वर द्वारा उन्हें दी गई आशीषों का उपयोग न केवल अपने आप को समृद्ध करने के लिए, वरन अन्य जाति मूर्तिपूजक शासनों का पोषण करने तथा उन्हें सामर्थी करने के लिए भी

किया।

नप्ताली (49:21)

आयत 21. नप्ताली राहेल की दासी बिल्हा से जन्मा दूसरा पुत्र था (30:7, 8)। याकूब के आशीष के शब्दों को बीतती हुई सदियों के साथ अनेकों प्रकार से समझा गया है। LXX तथा अरामी टार्गम्स MT से (जो लगभग 800 ईस्वी में तैयार हुई) भिन्न हैं। विक्टर पी. हैमिल्टन ने आयत 21 की छः भिन्न व्याख्या सूचीबद्ध की हैं; इनमें से पाँच नप्ताली गोत्र के सकारात्मक आंकलन हैं, जब कि एक नकारात्मक है।[20] यद्यपि कोई भी इसके लिए निश्चित नहीं हो सकता है कि वृद्ध कुलपति क्या भविष्यवाणी कर रहा था, किंतु अन्य की अपेक्षा दो विकल्प अधिक संगत प्रतीत होते हैं। प्रथम को NASB में प्रयुक्त किया गया है: **नप्ताली छूटी हुई हिरनी है, वह सुन्दर बातें बोलता है।** दुसरा NIV में आता है: "नप्ताली छूटी हुई हिरनी है जो सुन्दर बच्चे जनती है।"

दोनों ही अनुवादों में आयत का प्रथम भाग लगभग एक सा है, नप्ताली को "छूटी हुई" या "मुक्त की गई" हिरनी के समान कहा गया है। आयत के दूसरे भाग में NASB कहती है "वह सुन्दर बातें बोलता है"; यह नप्ताली को हिरनी कहे जाने से असंगत है, क्योंकि हिरनी "सुन्दर शब्द" नहीं बोल सकती। परन्तु यह उस समानता के अनुसार है कि वह "सुन्दर बच्चे जनती है" (NIV; देखें NRSV)। प्रतीक "छूटी हुई हिरनी" नप्ताली के गोत्र का स्वतंत्र और किसी पर निर्भर न रहने की ओर संकेत करता है जो कि नप्ताली को गलील के सागर के उत्तर और पश्चिम में बहुत कम जनसंख्या वाले इलाके में निवास करने के कारण होना था। क्योंकि उन्हें उस इलाके में रहने वाले अन्य जाति मूर्तिपूजक निवासियों से कम प्रतिरोध का सामना करना था, वे एक अनियंत्रित हिरनी के समान संख्या में बढ़ते रह सकते थे।

अन्य पुराने नियम के हवालों में, नप्ताली की पहचान "सुन्दर बातें बोलने वाला" होने के लिए नहीं वरन निर्णायक कार्यवाही करने के लिए है। उन्होंने, जबूलून के गोत्र के साथ, दबोरा की पुकार पर हज़ारों पुरुषों को भेजा, ताकि वे सीसरा की विशाल सेना, जिसमें लोहे के नौ सौ रथ थे, का सामना कर सकें (न्यायियों 4:3, 6, 10)। सीसरा गलील के इलाके के कई कबीलों के लिए बड़ा खतरा बन गया था, परन्तु नप्ताली के पुरुषों ने दबोरा और बाराक की सहायता की और उस पर बड़ी विजय प्राप्त की। परन्तु अपने इलाके में, उन्होंने उत्तर पश्चिम के दो नगरों: बेतशेमेश तथा बेतनाथ में से सभी कनानियों को नहीं निकाला। वरन नप्ताली का गोत्र उन अन्य-जाति मूर्तिपूजकों "में बस गया" और उन्हें "वश में" कर के उन से मज़दूरी करवाई (न्यायियों 1:33)।

राहेल के पुत्र (49:22-27)

[22]यूसुफ़ बलवन्त लता की एक शाखा है, वह सोते के पास लगी हुई फलवन्त लता की एक शाखा है; उसकी डालियां भीत पर से चढ़कर फैल जाती हैं।

[23]धनुर्धारियों ने उसको खेदित किया, और उस पर तीर मारे, और उसके पीछे पड़े हैं। [24]पर उसका धनुष दृढ़ रहा, और उसकी बांह और हाथ याकूब के उसी शक्तिमान ईश्वर के हाथों के द्वारा फुर्तीले हुए, (जिसके पास से वह चरवाहा आएगा, जो इस्राएल का पत्थर भी ठहरेगा।) [25]यह तेरे पिता के उस ईश्वर का काम है, जो तेरी सहायता करेगा, उस सर्वशक्तिमान का जो तुझे ऊपर से आकाश में की आशीषें, और नीचे से गहिरे जल में की आशीषें, और स्तनों और गर्भ की आशीषें देगा। [26]तेरे पिता के आशीर्वाद, मेरे पितरों के आशीर्वादों से अधिक बढ़ गए हैं और सनातन पहाड़ियों की मनचाही वस्तुओं के समान बने रहेंगे: वे यूसुफ़ के सिर पर, जो अपने भाइयों से अलग किया गया था, उसी के सिर के मुकुट पर फूले फलेंगे। [27]बिन्यामीन फाड़ने वाला भेड़िया है, सबेरे तो वह अहेर भक्षण करेगा, और साँझ को लूट बाँट लेगा।

यूसुफ़ (49:22-26)

आयत 22. यूसुफ़ याकूब का ग्यारहवाँ पुत्र था और राहेल से प्रथम पुत्र था (30:22-24)। क्योंकि वह अपने पिता का सबसे मनपसंद पुत्र था (37:3; 45:28; 46:30), हमें आश्चर्य नहीं करना चाहिए कि वह याकूब की आशीषों से बहुत दूर था। यूसुफ़ को **फलवंत लता** की एक शाखा (בֵּן פֹּרָת, बने पोरथ) के रूप में पहचानते हुए इसकी शुरुवात एक रूपक अलंकार से हुई। इस इब्रानी भाव का शाब्दिक अर्थ है "फल उत्पन्न करने वाले का एक पुत्र" (पेड़)।[21] इब्रानी या अरामी भाषा में, रूपक तरीके से "का पुत्र" का इस्तेमाल गुणवत्ता या चरित्र की श्रेष्ठता को बताता था। नए नियम में भी ऐसा ही था, जब शब्द यूसुफ़ को "बरनबास" कहा जाता था, अरामी में जिसका अर्थ है "उत्साह का पुत्र" (प्रेरितों 4:36)। इसी प्रकार का रूपक अलंकार भजन संहिता 80:14, 15 में पाया जाता है, जो कि प्रतीकात्मक रूप से इस्राएल का वर्णन "दाखलता" के रूप में करता है, जिसे परमेश्वर ने लगाया है। संपूर्ण देश को भी परमेश्वर का "पुत्र" कहा जाता था (निर्गमन 4:22; होशे 11:1)।

यूसुफ़ को आशीष देते हुए, याकूब ने उसका वर्णन सो**ते के पास लगी हुई एक फलदायी लता** के रूप में किया। एक सत्यनिष्ठ मनुष्य का चित्र जो नदियों के किनारे लगाये गए वृक्ष के समान फल लाता है, पुराने नियम में विभिन्न स्थानों में दिखाई देता है (भजन 1:1-3; 92:12-14; यिर्म. 17:7, 8)।

फिर, याकूब ने कहा, **उसकी डालियाँ भीत पर से चढ़कर फैल जाती है।** इब्रानी में, अनुवादित शब्द "डालियाँ" בָּנוֹת *(बेनोथ)* है, जिसका शाब्दिक अर्थ है "बेटियाँ।" "बेटियाँ" एक पेड़ के रूपक अलंकार के रूप में इसकी शाखाएँ है, यद्यपि यह शब्द बेनोथ का शाब्दिक अर्थ नहीं है। इसका चित्र एक असाधारण पेड़ को बताता है जो तेज़ी से बढ़ता और फैलता है, ताकि यह किसी बड़े में न समा पाए।

कुछ लेखक सोचते है कि यहाँ पर चित्र का अर्थ है यूसुफ़ का पुत्र एप्रैम, जिसके नाम का अर्थ "फलवंत होना" (41:52), क्योंकि वह याकूब का सबसे

फलवंत वंश होगा। याकूब याद कर रहे थे - जैसे ही यूसुफ़ के पुत्रों को आशीष दे रहे थे (48:3, 4) - बेतेल में परमेश्वर से मिलना और उसे फलवंत और अनगिनत बनाने का परमेश्वर का वादा (देखे 35:11)। यह उनके लिए स्वाभाविक बात थी कि इस आशीष को यूसुफ़ को दे दे; उनके द्वारा, उनके दोनों पुत्रों एप्रैम और मनश्शे के वंशज में इसकी परिपूर्णता होगी।

आयत 23. याकूब की आशीष की मनोदशा समृद्धि से बदलकर खतरनाक हो गयी, जैसे ही उन्होंने उन **धनुर्धारियों** के विषय में बात की जिन्होंने **कष्ट देते हुए** यूसुफ़ पर **प्रहार** किया। उन्होंने कहा वे उनपर तीर फेंकते थे और चारों ओर से उसे परेशान करते थे। कुछ व्याख्या करने वाले इन वचनों को उस बात की भविष्यवाणी के रूप में बताते हैं, जिस विरोध और लड़ाई का सामना यूसुफ़ के वंशज वाचा की भूमि में करेंगे; किन्तु, इस सन्दर्भ में यह बात बहुत ही स्वाभाविक लगती है कि याकूब यूसुफ़ के आरंभिक जीवन की अलंकारी भाषा को दोहरा रहे थे (देखे 49:22)। तीरों का अलंकारी प्रयोग पुराने नियम में कई स्थानों में मिलता है। परमेश्वर ने प्रतीकात्मक रूप से दाऊद के विरोधियों पर तीर चलने की बात की (भजन 18:14)। जो लोगों का घात करते हैं उनका भी वर्णन उन पर तीर चलनेवालो के रूप में किया गया है (नीति. 25:18; 26:18, 19; यिर्म. 9:3, 8)। इसलिए, याकूब की आशीषों में धनुर्धारी और उनके तीर, उन विरोधियों और आरोपों को प्रस्तुत करते हैं, एक युवा व्यक्ति के रूप में यूसुफ़ ने जिनका सामना किया था।

पहला, उनके भाई "उनसे नफ़रत करते थे" (37:4, 5, 8) क्योंकि वह याकूब के सबसे मनपसंद पुत्र थे, और इसीलिए उन्होंने यूसुफ़ को कुछ मिद्यानियो के हाथों बेच दिया जो कि मिस्र जा रहे थे। 49:23 में "परेशान" (שָׂטַם, *सॅटम)* के लिए अनुवादित शब्द, वही शब्द है जिसका इस्तेमाल याकूब के द्वारा विश्वासघात किए जाने पर उसके प्रति एसाव की नफ़रत का वर्णन करने के लिए किया है। इसका शाब्दिक अर्थ है "दुर्भावना को लेकर जाना" (27:41), और यह छिपी हुई नफ़रत और दुर्भावना का भी वर्णन करता है, जिसके विषय में बाकी भाई घबराते थे कि शायद यूसुफ़ में यह हो और उनके पिता की मृत्यु के बाद शायद वह उनके प्रति दिखाए (50:15)।

आयत 24. उनके विरुद्ध उठी प्रतीकात्मक लड़ाई के प्रति यूसुफ़ का उत्तर था कि उसका **धनुष दृढ़ रहा, और उसकी बाँह और हाथ फुर्तीले था**, जैसे ही वह अपना बचाव कर रहे थे। यह चित्र बताता है कि यूसुफ़ बलवंत, साहसी और अपने शत्रुओं से लड़ने में सफल थे। किन्तु, अगला कथन बताता है कि क्यों यूसुफ़ सभी विरोधों के सामने प्रबल हो पाए: उन्होंने परमेश्वर की सामर्थ्य को ग्रहण किया। इस भाग में, बाइबल की किसी दूसरी कविता की तुलना में सबसे ज़्यादा नामों या शीर्षकों की बहुत सी भिन्नताओं के साथ परमेश्वर का उल्लेख किया गया है। इन आयतों में यूसुफ़ से अधिक यूसुफ़ के परमेश्वर के बारे में बताया गया है। परमेश्वर की सामर्थ्य पद बंध **याकूब के शक्तिमान ईश्वर** में दर्शायी गई है। उनके लोगों का चरवाहा होने के विचार में उनकी सौम्य देखभाल का वर्णन

किया गया है (देखे 48:15), जबकि उनकी दृढ़ स्थिरता और बचाव इस्राएल के पत्थर के पद में बताया गया है।

आयत 25. अगला शीर्षक इतिहास की गतिविधि में परमेश्वर की नियमितता पर ज़ोर देता है: याकूब ने परमेश्वर को **अपने पिता का परमेश्वर जो सहायता करता है** के रूप में पहचाना। यूसुफ़ कभी नहीं भूले कि वह छुटकारे के इतिहास की शृंखला में एक महत्वपूर्ण कड़ी थे, ठीक जैसे कि उनके पिता थे। याकूब के वचन उनके पुत्र को चेताते थे कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर (*एल शदाय;* 17:1), जिसने उनके परदादा अब्राहम को बुलाया और आशीष दी (12:1-3), वही यूसुफ़ के जीवन में काम कर रहे थे, उसे **ऊपर से आकाश में की आशीषें**, और **नीचे से गहरे जल में की आशीषें** देने के लिए। फिर परिवार के मुखिया ने स्तनों और गर्भ की आशीषों का उल्लेख किया, जिसका अनुभव यूसुफ़ और आसनत को अपने दो बच्चों के जन्म से प्राप्त हुआ था (41:50-52)। इसका यह अर्थ था कि फलवंत होने की परमेश्वर की आशीष यूसुफ़ के वंश में आगे चलती रहेगी।

आयत 26. याकूब ने अपने पुत्रों को याद दिलाया कि बारह पुत्रों की उनकी स्वयं की **आशीष**, उनके **पूर्वज**, अब्राहम और इसहाक से बढ़कर थी। अब्राहम आठ पुत्रों का पिता बन चुका था: हाजिरा से इशमाएल (16:15), सारा से इसहाक (21:2, 3), और कतुरा से छः पुत्र (25:1, 2)। इसहाक केवल दो पुत्रों के पिता थे, एसाव और याकूब (25:24-26)।

याकूब की आशीषों को कार्मेल पर्वत और हेर्मोन पर्वत के फलदायीपन के समान बताया जा सकता है - अनंतकाल तक बने रहनेवाले पर्वत की सबसे ऊँची सीमा - जो कि कनान देश के अर्ध-शुष्क भाग से अलग है, जहाँ पर भूमि और वनस्पतियाँ ग्रीष्मकाल में सूख जाते। याकूब की आशीष एक प्रार्थना भी थी कि परमेश्वर निरंतर सभी **अच्छी वस्तुओं को यूसुफ़ के सिर पर उंडेलते रहे, और** [उनके] **सिर के मुकुट पर, उनके भाइयों में से अलग किए व्यक्ति के रूप में।**

बिन्यामीन (49:27)

आयत 27. अंत में, याकूब ने अपने सबसे छोटे और यूसुफ़ के बाद वाले बेटे को आशीष दी, उनका सबसे प्यारा पुत्र, **बिन्यामीन**, जो राहेल से पैदा हुआ था, ठीक उसके मरने से पहले (35:16-20)। इस कमज़ोर और दुर्बल पुत्र, जिसकी रक्षा यहूदा और बड़े भाइयों को करनी थी (43:1-44:34), और बाद में **तीव्र भेड़िये** बने उनके वंशज के बीच में एक बड़ा अंतर दिखाई देता है। स्पष्ट रूप से, इस भविष्यवाणी की आशीष उनके वंशज के विषय में थी, जो यहोशू के समय के बाद, भविष्य में कनान देश में अपनी सेना के कारनामों के लिए प्रसिद्ध होंगे। याकूब के वर्णन ने उसे हिंसक भेड़िये के समान बताया। ऐसे जानवर खतरनाक प्रहार करते है और **सबेरे ... शिकार को खा जाते है**। युद्ध के बाद, **शाम को**, बिन्यामीन गोत्र की सेना अपनी विजय से प्राप्त लूट को बाँटती हुई दिखाई देती है। इसका एक आरंभिक उदाहरण है बिन्यामिनी न्यायी एहूद, जिसने यरदन नदी की पश्चिमी ओर मोआबियों के विरुद्ध सफलतापूर्वक लड़ाई लड़ी (न्यायियों

3:15-30)। गोत्र के हिंसक स्वभाव का दूसरा उदाहरण न्यायियों के बाद आने वाले समय में देखा जाता है, दूसरे इस्राएली गोत्रों के विरुद्ध बिन्यामीन युद्ध के दौरान (न्यायियों 20:14-21)। इस्राएल का पहला राजा शाऊल, बिन्यामीन गोत्र से था; और उनके पुरुषों को "शूरवीर योद्धा कहा जाता था" (1 इतिहास 8:33, 40; 12:2)।

याकूब की मृत्यु (49:28-33)

28इस्राएल के बारहों गोत्र ये ही है: और उनके पिता ने जिस जिस वचन से उनको आशीर्वाद दिया, वे ये ही हैं; एक एक को उसके योग्य आशीर्वाद के अनुसार उसने आशीर्वाद दिया। 29तब उसने यह कहकर उनको आज्ञा दी, "मैं अपने लोगों के साथ मिलने पर हूँ: इसलिए मुझे हित्ती एप्रोन की भूमि वाली गुफ़ा में जो मेरे बापदादों के साथ मिट्टी देना, 30अर्थात उसी गुफ़ा में जो कनान देश में मम्रे के सामने वाली मकपेला की भूमि में है; उस भूमि को अब्राहम ने हित्ती एप्रोन के हाथ से इसी लिए मोल लिया था कि वह कब्रिस्तान के लिए उसकी निज भूमि हो। 31वहाँ अब्राहम और उसकी पत्नी सारा को मिट्टी दी गई थी, और वहीं इसहाक और उसकी पत्नी रिबका को भी मिट्टी दी गई; और वहीं मैंने लिआ: को भी मिट्टी दी। 32वह भूमि और उसमें की गुफ़ा हित्तियों के हाथ से मोल ली गई है।" 33याकूब जब अपने पुत्रों को यह आज्ञा दे चुका, तब अपने पांव खाट पर समेत प्राण छोड़े, और अपने लोगों में जा मिला।

आयत 28. यूसुफ़ और उनके भाइयों से कहे गए याकूब के वचनों को संक्षिप्त करने के लिए, लेखक ने 49:1-27 में लिखा, **ऐसा उनके पिता ने आशीष देते समय उनसे कहा**। आगे, लेखक ने कहा कि हर एक ने अपने योग्य आशीष ग्रहण की। जैसे-जैसे साल व्यतीत होते गए, उनके पूर्वजों के विशेष चरित्र संकेतों को उन विभिन्न गोत्रों के बर्ताव और जीवनशैली में स्पष्ट रूप से देखा जाता है, जो पुत्रों से विकसित हुए, ठीक जैसा कि याकूब ने भविष्यवाणी की थी।

आयतें 29-33. जब मुखिया आशीष दे चुके, तब उन्होंने अपने पुत्रों को एक कार्यभार सौंपा। उन्होंने कहा, **"मैं अपने लोगों में जा मिलने वाला हूँ।"** उन्होंने अभिव्यक्ति तरीके से कहा कि मृत्यु निकट थी। यह भाव अब्राहम और इसहाक के साथ पारिवारिक एकता को बताता है। उनके शरीर को पूर्वजों की कब्र में रखा जाना था ... **हित्ती एप्रोन की भूमि वाली गुफ़ा में** (49:29)। याकूब ने आगे इस स्थान के बारे में कहा गुफ़ा जो मम्रे के सामने वाली मकपेला की भूमि में है (49:30)। सारा की मृत्यु के बाद अब्राहम ने भूमि और कब्र को **हित्ती के पुत्रों** से ख़रीदा था (49:32; देखे 23:1-20)।

आखिर में, मकपेला की कब्र सामुदायिक गाड़े जाने का स्थान बन गया था। सारा के साथ, **अब्राहम** को वहीं पर गाड़ा गया था (23:19; 25:9, 10), और फिर **इसहाक** (35:29) और **रिबका** को। बहुत सालों के बाद, याकूब ने **लिआ** को

वहाँ पर दफ़नाया (49:31)।[22] याकूब के लिए ये सारी बाते महत्वपूर्ण थी क्योंकि परमेश्वर ने **कनान देश** में अब्राहम की संतान के लिए एक स्थायी उत्तराधिकार का वादा किया था (49:30)।

यद्यपि यूसुफ़ के हस्तक्षेप के द्वारा, फ़िरौन की सहायता से याकूब और उनके परिवार को मिस्र में आशीषों का एक आश्रय स्थान मिला, उस देश में उनका निवास अस्थायी था। इसमें चाहे जितनी देर लगे, उनका विधान उन्हें फिर वाचा की भूमि में ले गया (15:13-18)। यहाँ तक कि मृत्यु से जी उठने के वादे के बिना ही, याकूब ने विश्वास किया की मकपेला की कब्र में उनके पूर्वजों के साथ गाड़े जाने से उस देश में इस्राएल के लौटने में वह उनके साथ भागीदार होंगे। याकूब **जब अपने पुत्रों को यह आज्ञा दे चुका, तब ... आखिरी साँस ली और अपने लोगों में जा मिला** (49:33)।

अतिरिक्त अध्ययन के लिए: "शीलो" का अर्थ (49:10)

अपने पुत्रों के लिए याकूब की नबूवतीय आशीष में, सबसे उलझाने वाली बात यह है कि यहूदा के लिए उनके अंतिम कथन में, जो बताता है की "शीलो" के आने तक यहूदा से "राजदंड" और "व्यवस्था देना" अलग न होगा (49:10)। परंपरागत रूप से इस कथन को मसीहा की भविष्यवाणी के रूप में देखा गया है, यहूदियों और मसीहियों[23] दोनों दे द्वारा। इसलिए इब्रानी पद बंध को विभिन्न तरीके से अनुवादित किया जा सकता है और मूल पाठ की भिन्नता दिखाई देती है, समय के साथ साथ आयत के बहुत से अनुवाद विकसित हुए हैं। यहाँ पर इनमें से कुछ की संक्षिप्त रूप से चर्चा की जा सकती है।

1. "शीलो के आने तक।" इब्रानी मूल पाठ का अनुवाद "शीलो के आने तक" के रूप में किया जा सकता है, लेकिन क्या "शीलो" का अर्थ मसीहा है, जैसा कि KJV, ASV और NASB अनुवाद बताते हैं? अरामी भाषा "तर्गुम ऑफ ओंकेलोस" (प्रथम शताब्दी ई.पू.) "शीलो" के स्थान पर मेशिहा ("मसीहा") का इस्तेमाल करती है और बताती है कि उनका "राज्य" स्थापित होगा और वह "देश के आज्ञाकारिता का आनंद लेंगे।"[24] इसी तरह से, मृत सागर का एक अध्याय बताता है कि कुमरान समुदाय ने 49:10 को समझ लिया और सिखाने लगे कि "सत्यनिष्ठा के मसीहा" को अनंतकाल तक अपने लोगों पर राजा का पद दिया जाएगा।[25] यद्यपि 49:10 में मसीहा के विषय में बताने के लिए इसका अनुवाद "शीलो" के रूप में करना प्रचलित बात बन गया है, वचन के हर दूसरे मूल पाठ जिसमें शब्द "शीलो" होता है, वे इसका इस्तेमाल एक नगर के नाम के रूप में करते हैं। एप्रैम की भूमि में स्थित, शीलो का विनाश कर दिया गया था, वहाँ पर होने वाली दुष्टता के कारण (1 शमूएल 1:1-3; 2:12-17, 22-36; 4:1-22; भजन 78:60-64)। सैंकड़ो सालों बाद, यिर्मयाह ने शीलो के विनाश का इस्तेमाल उस प्रतीक के रूप में किया, जो कि परमेश्वर यरूशलेम और मंदिर पर लाने वाले थे, यदि उनके लोग अपने दुष्ट कामों से मन न फिराते (यिर्म 7:12-

14; 26:6, 9)। "शीलो" को मसीहा के एक शीर्षक के रूप में शायद स्वीकार नहीं किया जाना चाहिए क्योंकि नए नियम के लेखक, जिन्होंने मसीहा की भविष्यवाणी के रूप में बहुत से पुराने नियम के वचनों को दोहराया, उन्होंने कभी भी 49:10 में "शीलो" को ऐसी भविष्यवाणी के रूप में नहीं बताया जो यीशु की ओर संकेत करती थी।

2. "जब तक यहूदा शीलो में न आ जाए।" इब्रानी मूल पाठ को एक स्पष्टवादी तरीके से पढ़ने से यह अनुवाद प्राप्त होता है: "... जब तक वह [यहूदा] में शीलो न आ जाए"[26] किन्तु यदि इस तरीके से इसका अनुवाद होता है, तो पद बंध का अर्थ व्यक्तिगत रूप से यहूदा नहीं है, लेकिन इसकी एक संतान या यहूदा का गोत्र। यह गोत्र या व्यक्ति शीलो से दूसरे गोत्रों के ऊपर शासन करेगा।

यह बात सच है की न्यायियों की कालावधि के अंत के बाद से शीलो इस्राएलियों का आराधना करने का केंद्र था, और परमेश्वर का संदूक वहाँ पर रखा था (1 शमूएल 3:3; 4:3, 4)। किन्तु, स्थिति गंभीर रूप से बदल गयी जब फिलिस्तियों ने बड़ी संख्या में इस्राएल की सेना का वध करते हुए उन्हें हरा दिया (1 शमूएल 4:10, 11) और संदूक को उठाकर अशदोद पहुँचा दिया, जो कि उनके मुख्य शहरों में से एक है (1 शमूएल 5:1)।

49:10 को शीलो में एक राजदंड के रूप में देखने में दुर्बलता यह है कि हमें यहूदा के किसी वंशज का संकेत नहीं मिलता है - निश्चित ही दाऊद नहीं है - जो एप्रैम से शीलो में परमेश्वर के लोगों के ऊपर शासन करता है। इसके विपरीत, उनके और उनके लोगों द्वारा यरूशलेम पर जय पाने और इसे इस्राएली राज्य की राजधानी बनाने से पहले दाऊद ने साढ़े सात वर्षों तक हेब्रोन में यहूदा के गोत्र पर शासन किया (2 शमूएल 5:1-5)। यरूशलेम में उन्होंने लगभग साढ़े बत्तीस वर्ष तक राज्य किया।

3. "ताकि उसे प्रशंसा मिले।" एक प्राचीन यहूदी मिद्राश (मूल पाठ का एक स्पष्टीकरण) ने कुछ मध्य कालीन रब्बीयों को इतना प्रभावित किया कि उन्होंने इब्रानी में "शीलो," שִׁילֹה *(शीलो)*, को बदलकर שַׁי לֹה *(शय लोह)* कर दें, जिसका अनुवाद है "कि उसे प्रशंसा मिले" (NJPSV)।[27] इसके समानन्तर अनुवाद NEB और NRSV में भी पाए जाते है। यदि इस बदलाव को स्वीकार किया जाता है, तो पद बंध का अर्थ होता प्रशंसा यहूदा (गोत्र) को मिलती, इनके द्वारा यह दाऊद के पास आएगी और आखिर में मसीहा के पास।

क्योंकि "मसीहा" का अर्थ है यहूदा के गोत्र से एक महान राजा,[28] यह अनुवाद यहूदियों और मसीह दोनों को एक समान समझ में आया। दोनों समूहों के कुछ लोगों ने एक राजनैतिक मसीहा की कल्पना की है, जो अन्य जाति के देश को हराएगा और उनसे प्रशंसा ग्रहण करेगा, यरूशलेम में दाऊद के सिंहासन पर राज्य करते हुए। किन्तु, ऐसे एक दृश्य पर दो हज़ार वर्षों से कुछ लोगों की राय बनी हुई है, जिस पर बहुत से यहूदी और मसीही संदेह करते हैं।

4. "जब तक वह न आए जिसका राजदंड है।" 49:10 का और अधिक सराहनीय अर्थ सामरी पुस्तकों और MT में इस लेखांश के वैकल्पिक इब्रानी रूप

में पाया जाता है। "शीलो" के लिए शय लोह के बजाय वे שִׁלֹּה *(शेल्लोह)* कहते है, जिसका अर्थ है "जिसका यह है," जो यह कथन देता है: "जब तक वह न आ जाए जिसका यह [राजदंड] है।" NIV, NLT और JB की यही परिभाषिक शब्दावली है। एक मृत सागर हस्तलेख (डेड सी स्क्रॉल 4Q252) 49:10 का पहले (अर्थ) प्रदान करता है, राजदंड को "अनंतकाल पीढ़ी तक उनके लोगों के ऊपर राजसी वाचा [मसीहा का राज्य करना]"[29] के रूप में समझाते हुए। यहेजकेल 21:27 में समानन्तर पद बंध है। परमेश्वर की ओर से बोलते हुए, भविष्यवक्ता ने राजा सिदकिय्याह को उनके सर से मुकुट हटाने के लिए कहा "जब तक उसका अधिकारी न आये, और तब मैं उसे दे दूँगा।"

49:8-12 के पूरे सन्दर्भ को देखते हुए, याकूब दूसरे गोत्रों के ऊपर यहूदा की चढ़ाई की भविष्यवाणी करते हुए दिखाई देते हैं। किन्तु, सैकड़ों सालो बाद यह बात प्रत्यक्ष हुई, जब एक शक्तिशाली सिंह के रूप में, यहूदा का गोत्र कनान पर चढ़ाई करने के लिए आगे बढ़ा (न्यायियों 1:1, 2)। बहुत समय बीतने के बाद, यहूदा के गोत्र से दाऊद, जब वह एक छोटा बालक ही था, उठा और शमूएल के द्वारा उसका राजभिषेक किया गया (1 शमूएल 16:10-13)। बहुत सालों बाद, उन्होंने बारह गोत्रों को एक किया और परमेश्वर के अभिषिक्त के रूप में उनसे राजा का राजदंड ग्रहण किया (מָשִׁיחַ, *मशिअच*[30]) (2 शमूएल 5:1-3)। आखिर में, उन्होंने अपने सभी शत्रुओं को हरा दिया (2 शमूएल 8:1-18) और "लोग उनके प्रति आज्ञाकारी थे" (49:10)। तब परिवार के मुखिया से परमेश्वर का वादा एक वास्तविकता बन गया (13:14-17; 15:18-21; 26:3; 28:13; 35:12)। युद्ध के परिणामस्वरूप, यहूदा की राजसी वंशावली शान्ति और समृद्धि की आशीष पाती थी।

49:10 में याकूब का उल्लेख मसीहा की ओर संकेत करता हुआ लगता है। फिर भी, "शीलो" नाम को मसीह के लिए एक पद के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए।

अनुप्रयोग

अब्राहम के वारिस के विधान को बनाने के लिए भविष्यवाणी की आशीष (इतिहास 49)

याकूब ने अपने पुत्रों को आशीषों की एक पैतृक संपत्ति दी। प्राचीन बाइबल जगत में, एक पिता के लिए यह बहुत ही महत्वपूर्ण बात थी कि, जब वह मृत्यु के करीब हो, तब अपने पुत्रों को एक साथ बुलाकर उन्हें आशीष दें। यह विशेष रूप से याकूब के लिए महत्वपूर्ण बात थी। अब्राहम और इसहाक के द्वारा, याकूब और उनके पुत्रों के पास एक दैवीय विधान था कि एक अनंत संपत्ति के रूप में कनान देश की भूमि को ग्रहण करें और "पृथ्वी के सभी घरानों" के लिए वे एक आशीष का कारण बनने वाले थे (12:2, 3; 13:15; 17:5-8; 26:3, 4; 28:13, 14)। यह एक महान सुविधा और गंभीर उत्तरदायित्व था। यही कारण है कि कुछ

आशीषें सकारात्मक आशीषें थी और दूसरी अधिकतर श्रापों की तरह नकारात्मक थी।

आशीषें स्वभाव में भविष्यवाणी और वाचा स्वरूप थी; लेकिन इसका यह अर्थ नहीं है की याकूब के पुत्रों और उनकी संतानों का भौतिक या आत्मिक भविष्य पूर्व निर्धारित था, चुनाव या बदलाव की संभावना के बिना। बाइबल की भविष्यवाणियों को समझने में स्वेच्छा और मानवीय कार्य हमेशा महत्वपूर्ण कारक होते है। परिणाम हमेशा उन लोगों के उत्तर पर निर्भर होते हैं, जिनके लिए भविष्यवाणियाँ की गयी है।

निर्भरता का यह सिद्धांत उन आशीषों के संबंध में मूलभूत था, जो याकूब ने अपने हर एक पुत्र को दी। उनकी संतान बारह गोत्र बनेंगे और कई पीढ़ियाँ दासत्व में रहने के बाद वे मिस्र से बहार निकलेंगे (15:13, 16; निर्गमन 12:40, 41)। तब वे अपने स्थायी घर के रूप में कनान में प्रवेश करेंगे और उसमें बस जायेंगे। परात महानद के उस पार लंबे समय तक रहते हुए, उन्होंने मिस्र के देवताओं की उपासना करना शुरू कर दिया था (यहोशू 24:14)। यही कारण है उनमें से कुछ लोग सीनै पर्वत के नीचे सोने के एक बछड़े की उपासना करने लगे (निर्गमन 32:4), जिसके परिणामस्वरूप उस दिन तीन हज़ार लोग मर गए (निर्गमन 32:5-8, 25-28)। बालपोर देवता को पूजना लोगों को भटका रहा था क्योंकि इसमें दावत और बहुत सी शराब और वेश्याओं के साथ शारीरिक संबंध शामिल था। बहुत से इस्राएली, कनान में जाने से पहले ऐसे प्रलोभनों के शिकार हो गए (गिनती 25:1-9)।

अब्राहम की संतान ने सोचना शुरू किया कि परमेश्वर कभी भी किसी भी चीज़ को कनान में उनके उत्तराधिकार को संकट में न डालने देंगे। वे परमेश्वर की प्रतिज्ञा में सुरक्षित महसूस कर रहे थे कि कनान की भूमि को वह अब्राहम की संतान को "एक अनंत संपत्ति" के रूप में देंगे (13:15; 17:8), और वे मान रहे थे कि यह एक बदला न जा सकने वाला वादा है। मूसा इस खतरनाक धारणा से अवगत हो गए, जंगल में एक सभा में उन्होंने कड़े शब्दों में लोगों को चेतावनी दी:

> जब तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे उस देश में पहुँचाए जिसके विषय में उसने अब्राहम, इसहाक और याकूब नामक तेरे पूर्वजों से तुझे देने की शपथ खाई ... तब सावधान रहना, कहीं ऐसा न हो कि तू यहोवा को भूल जाए ... तुम पराए देवताओं के, अर्थात अपने चारों ओर के देशों के लोगों के देवताओं के पीछे न हो लेना; क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा जो तेरे बीच में है वह जल उठने वाला ईश्वर है; कहीं ऐसा न हो कि तेरे परमेश्वर यहोवा का कोप तुझ पर भड़के, और वह तुझ को पृथ्वी पर से नष्ट कर डाले (व्यव. 6:10-15)।

मूसा की चेतावनी स्पष्ट और मज़बूत थी: यदि इस्राएल परमेश्वर के प्रति वफ़ादार नहीं रहता, तो लोग न केवल भूमि को खो देते, लेकिन एक देश के रूप में अपने अस्तित्व को भी खो देते। इसका यह अर्थ है कि याकूब के द्वारा सौंपी

गयी आशीष और भूमि में लोगों का अस्तित्व शर्त पर निर्भर था, यद्यपि परमेश्वर ने सौगंध ली थी कि वे इसे एक अनंत संपत्ति के रूप में पाएंगे।[31]

कनान पर जय आसानी से नहीं मिली। यहाँ तक कि यरीहो में महान विजय प्राप्त करने के परिणामस्वरूप, इस्राएल के खेमे में पाप पाया गया। इसके कारण ऐ में हार मिली (यहोशू 7:1-12), और पाप इस्राएलियों के सामने बाधा डालने लगा। सालों बाद, जब "यहोशू बूढ़ा हो गया" और "बहुत सी भूमि" पर अब भी जय पाना बाकी था (यहोशू 13:1), तब बूढ़े लीडर इस्राएलियों से विनती करने लगे कि दूसरे ईश्वरों को "छोड़ दो" (यहोशू 24:14, 15)। किन्तु, उन्होंने ऐसा नहीं किया। यहोशू की मृत्यु के बाद कनानियों के पास अब भी कनान में कई प्रभाव क्षेत्र थे, और ईश्वर को न मानने वाले उनके कार्य निरंतर इस्राएलियों को प्रभावित करते थे (न्यायियों 1:1)।

न्यायियों का समय इस्राएलियों के लिए संकट जनक था। कई बार, यहूदी लोग परमेश्वर से भटक गए और "बाल देवताओं और अशतोरेत" की उपासना करने लगे (न्यायियों 2:13)। इसके परिणामस्वरूप, परमेश्वर ने उन्हें लूटपाट करनेवालों के द्वारा पराजित होने दिया, जिन्होंने उनकी बहुत तबाही की। अंतिम न्यायी, शमूएल ने शाऊल को इस्राएल के पहले राजा के रूप में अभिषिक्त किया; लेकिन उनका राज्य करना देश के लिए बर्बादी थी। अंत में, दाऊद के राज्य में, इस्राएल ने अपने शत्रुओं के विरुद्ध बहुत अधिक सफलता का आनंद लिया। दाऊद के पुत्र और वारिस, सुलेमान ने यरूशलेम को विजातीय स्त्रियों और उनके देवताओं की उपासना करने के लिए स्थानों से भरने के द्वारा देश के नैतिक और आत्मिक चरित्र को नष्ट कर दिया (1 राजा 11:1-10)। परमेश्वर सुलेमान से क्रोधित हो गए और राजा को चेतावनी दी कि उनकी मृत्यु के बाद, राज्य दो भागों में बंट जाएगा: इस्राएल का राज्य उत्तर दिशा में और यहूदा का राज्य दक्षिणी दिशा में।

जैसे ही राज्य बंट गया, दो अलग देश लगातार नीचे गिरने लगे। दोनों दलों में युद्ध छेड़ने के द्वारा उन्होंने अपने आपको कमज़ोर बना दिया, और दोनों, विदेशी ताकतों के सामने अपनी पहचान बनाये रखने में संघर्ष करने लगे। शासन करने वाला हर राजा मूर्तिपूजक था। लोगों ने एलिय्याह, एलिशा और दूसरे भविष्यवक्ताओं के उपदेश को मानना अस्वीकार कर दिया; वे अपनी मूर्तियों को छोड़कर परमेश्वर के पास वापिस नहीं आना चाहते थे। लगभग दो सौ वर्षों तक मूर्तिपूजा में और परमेश्वर के विरुद्ध बलवा करते हुए जीने के बाद, उत्तरी राज्य पर अश्शूरों ने अधिकार ने लिया और 722 ई.पू. में इसे नष्ट कर दिया, और यह फिर कभी नहीं उठ पाया (2 राजा 18:9-12)।

यहूदा के दक्षिणी राज्य का अंत भी इसी समान था, यद्यपि यह उत्तरी राज्य 136 वर्ष अधिक अर्थात 586 ई.पू. तक बना रहा। उसके अधिक समय तक बने रहने का कारण यह था कि उसमें यहोशापात, हिजिकिय्याह और योशिय्याह जैसे कुछ अच्छे राजा थे। योशिय्याह की मृत्यु के बाद, लगातार मूर्तिपूजक राजा यरूशलेम में राज्य करने लगे। मंदिर, मूर्तियों और विजातीय देवालयों से भरा

हुआ था। नगर की दक्षिणी दिशा की घाटी में, इस्राएलियों ने अपने बेटे और बेटियों को मोलेक और बाल देवताओं के लिए बलि चढ़ाया था (2 राजा 23:10; यिर्म. 19:4-6)।

आराधना के नाम पर इन रक्तमय क्रूरता के बीच में, परमेश्वर ने यिर्मयाह को कुम्हार के घर पर जाने का और उसे कुम्हार को चाक पर एक बर्तन बनाते हुए देखने का निर्देश दिया (यिर्म. 18:1, 2)। जब मिट्टी ख़राब हो गयी क्योंकि यह कुम्हार के हाथों के काम को रोक रही थी, तब उसने दोबारा इसे आकार दिया, जैसा कि इसे एक इस्तेमाल योग्य बर्तन बनाने के लिए यह करना आवश्यक है। यदि यह कुम्हार की निपुण उँगलियों के कुशल कार्य को रोकता है और ऐसा कठोर हो जाता कि उसे इस्तेमाल न किया जा सके, तो वह उस काम के योग्य नहीं रहता, जिसके लिए कुम्हार ने उसको रचने की योजना बनाई थी (यिर्म. 18:3, 4)। इस्राएल परमेश्वर के हाथों में मिट्टी की तरह था। यद्यपि लोग उनकी इच्छा का उल्लंघन करते थे, तब भी परमेश्वर निरंतर कोशिश करते रहे कि उन्हें सम्मान का एक बर्तन बनाए, जिसका इस्तेमाल वह प्राचीन विजातीय विश्व में अपनी सत्यनिष्ठा और पवित्रता को दिखाने में कर सके। क्योंकि उनसे मन फिराव करवाने की परमेश्वर के प्रयासों को उन्होंने रोका और मूर्तिपूजा और दुराचार को नहीं छोड़ा, तब केवल एक चीज़ रह गयी थी की दाऊद के राज्य को तोड़ दे, जैसे कि एक कुम्हार एक ऐसे बेकार आकर के बर्तन को तोड़ देगा जिसे सुधारा नहीं जा सकता है (यिर्म. 18:3-12; 19:10, 11)। ठीक यही हुआ: बेबीलोन के लोग वह उपकरण बन गए जिसका इस्तेमाल परमेश्वर ने उस अंतिम निशानी को नष्ट करने के लिए किया, जो कभी दाऊद का राज्य था, और सत्तर वर्षों तक इस्राएलियों को बेबीलोन के दासत्व में रहना पड़ा (2 इतिहास 36:21; दानिय्येल 9:2)।

इस्राएल का इतिहास स्पष्ट तरीके से दर्शाता है की अब्राहम, इसहाक और याकूब से किए गए वादे, और याकूब ने अपने पुत्रों को जो आशीष दी, वह पूर्व निर्धारित भविष्यवाणियों की निश्चितता नहीं थी।

इस्राएल का इतिहास स्पष्ट तरीके से दर्शाता है की अब्राहम, इसहाक और याकूब से किये गए वादे, और याकूब ने अपने पुत्रों को जो आशीष दी, वह पूर्व निर्धारित भविष्यवाणियों की निश्चितता नहीं थी। इसके बजाए, उन्होंने इस्राएल के सशक्त भविष्य की रूप रेखा मात्र संक्षिप्त, सशर्त और अधूरी शामिल की है। याकूब के शब्दों में, हम कनान में 12 गोत्रों के सामान्य गुणों को देखते हैं: जहाँ वह रहेंगे, उनके जीवन की गुणवत्ता और उन में से कुछ कैसे अपने जीवन को चलाएंगे। उसके कथन गोत्रों के आत्मिक भविष्य को पूर्व निर्धारित नहीं करते। मात्र विशिष्ट भौतिक पक्ष ही पूरे हुए थे जो इस तरह से हैं: (1) रूबेन के स्थान पर यूसुफ़ को विरासत का दुगना हिस्सा दिया गया था, जबकि एप्रैम और मनश्शे प्रत्येक ने भूमि आवंटन को पाया था। (2) शिमोन की भावी पीढ़ी यहूदा के क्षेत्र में बिखर गई, जबकि लेवी की संतान को सभी 12 गोत्रों में नगर मिले। (3) यहूदा का वंश प्रधान गोत्र बना और अन्ततः राजा (दाऊद) इस गोत्र में से

आया, जिसके पास राज दण्ड था और शासन छड़ी थी जो इस्राएल के 12 गोत्रों पर उसके राज्य करने का प्रतीक हुईं। यरूशलेम का दुःखद विनाश स्पष्ट रूप से प्रकट करता है कि इब्रानी शब्द *'ओलाम* ("सदा के लिए"), इसका वास्तविक अर्थ है "स्थिर समय" और वह "समय" 586 ई.पू. समाप्त हो गया था।

यहूदी राज्य का विनाश और प्रतिज्ञा के देश के खोए जाने का अर्थ यह नहीं है कि परमेश्वर की प्रतिज्ञाएँ विफल हो गई हैं। राज्य अपने आप में सीमित राजनैतिक और सैनिक इकाई था। *'ओलाम* की त्रुटिपूर्ण व्याख्याओं के बावजूद भी, राज्य के हमेशा तक रहने का विचार कभी नहीं था। कुलपतियों के लिए मूलभूत आदेश परमेश्वर के आशीर्वादों को संसार के सभी कुलों का साधन बनना था। इसके लिए विश्वव्यापी अस्थाई राज्य के स्थापन की ज़रूरत नहीं थी। इस तरह का लक्ष्य तो सैनिक बल, असंख्य जन हानि के द्वारा ही हो सकेगा। एक रोमी इतिहासकार, टैसिटस ने कैसर के द्वारा रोमी विजय अभियान के विषय कहा, "वे निर्जन स्थान बना देते हैं [संसार का] और इसे 'शान्ति' का नाम देते हैं"[32] (*पैक्स रोमाना*, या "रोमी शान्ति")। अपने पूर्ण सैनिक बल के साथ और बहुत से खूनी लड़ाइयों के द्वारा कैसर कुछ शताब्दियों के लिए संसार के थोड़े ही भाग पर अपना नियन्त्रण कर सकता इससे पहले कि उनका राज्य टुकड़े-टुकड़े होने लगा और अन्त में 476 ई. में पतन हो गया।

कोई भी व्यक्ति विश्वव्यापी राज्य की स्थापना के लिए समस्त सेनाओं को जीत नहीं सकता, और परमेश्वर नियन्त्रण करने के लिए इस तरह कभी नहीं करेगा। यीशु ने इस तरह के शासन और राज्य को स्वीकार करने से निश्चित रूप से इनकार किया (यूहन्ना 6:15; 18:36)। लाज़र को मृतकों में से जीवित करने के बाद, यहूदी नेता इस बात का इनकार नहीं कर सके कि एक बड़ा आश्चर्यकर्म हुआ है (यूहन्ना 11:39-44)। वे इस बात पर सहमत थे कि यीशु रोम के विरुद्ध क्रांति लाने का प्रयास करेगा; और उन्होंने यीशु को अपने लिए एक बड़ा खतरा मान लिया, उन्होंने यीशु को जितना जल्दी हो सके उसे मारने का निश्चय किया (यूहन्ना 11:45-53)।

यहूदी भीड़ जो उससे मिलने आई जब उसने यरूशलेम में विजयी प्रवेश किया था और उसे राजा बनने के लिए कदम उठाने के लिए उत्साहित किया था। उल्लसित आवाज़ से वे पुकार कर कहने लगे, "होशाना, धन्य इस्राएल का राजा, जो प्रभु के नाम से आता है" (यूहन्ना 12:13)। "होशाना" इब्रानी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है "बचाओ" (भजन 118:25), और यह "बड़ी स्तुति" का एक मुख्य भाग था जिसे यहूदी अपने मुख्य सभी उत्सवों पर गाया करते थे (भजन 113-118)। जब यरूशलेम में भीड़ ने बचाव के लिए पुकारा, वे राजनैतिक, सैन्य मसीह की मांग कर रहे थे रोमी सेना के विरुद्ध उठे और पीलातुस और रोमियों को फिलिस्तीन से बाहर निकाल दे। वे हेरोदेस अन्तिपास को हटाने की अभिलाषा कर रहे थे, जो रोमी कठपुतली के रूप में पेरिया और गलील पर शासन कर रहा था। परन्तु, यीशु ने गधे पर बैठकर यरूशलेम में प्रवेश किया (यूहन्ना 12:14, 15; जकर्याह 9:9), वह युद्ध के घोड़े की बजाए, बोझ ढोने वाले

शान्तिपूर्ण जानवर पर आ रहा था। वह किसी सेनापति के रूप में सेना को मारने और उनका नाश करने नहीं आया परन्तु शान्ति के राजकुमार के रूप में आया। उसके द्वारा "युद्ध के धनुष तोड़ डाले जाएंगे"; क्योंकि "वह अन्यजातियों से शान्ति की बातें कहेगा" (גּוֹיִם, *गोयलिम*, अन्यजातियाँ; जकर्याह 9:10)।

यहूदी लोगों का पूर्ण इतिहास लोगों को "परमेश्वर की पूर्व निर्धारित योजना" एक घटना की ओर ले गया (प्रेरितों 2:23): यीशु का क्रूस पर चढ़ाया जाना। तौभी, यीशु के पास एक चुनाव था; परन्तु उसने प्रार्थना की, "तेरी इच्छा पूरी हो" (मत्ती 26:42; देखें 26:39, 44)। यीशु की मृत्यु के परिणाम में तीन भौतिक तथ्य सामने आए। यहूदी नेता भयभीत थे और राजनैतिक और धार्मिक कारणों से उसका विरोध किया। कुछ लोग यीशु को लेकर भ्रमित थे, और उनको यहूदी अगुओं के द्वारा उकसाया गया कि वे यीशु को क्रूस चढ़ाने और बरअब्बा को छोड़ने के लिए चिल्लाएँ। पीलातुस डर गया कि यहूदी रोम को प्रतिनिधि मण्डल भेज देंगे यह दोष लगाते हुए कि पीलातुस ने एक ऐसे खतरनाक विद्रोही व्यक्ति को छोड़ दिया जिसने कैसर का विरोध किया (यूहन्ना 19:12)। इन तथ्यों ने परमेश्वर की योजना के तालमेल में कार्य किया, भले ही दुष्ट व्यक्तियों ने मुक्त रूप से अभिनय करने का चयन किया।

कष्टदायक मृत्यु के लिए हिंसक शत्रुओं के हाथों में सौंपे जाने से, मसीह ने कष्ट सहने वाले परमेश्वर के मेमने की भूमिका को निभाया (यशा. 53:5, 6, 10, 11), जिसका बलिदान समस्त संसार के पापों के लिए प्रायश्चित था (यूहन्ना 1:29; 1 पतरस 2:24)। परमेश्वर के द्वारा उसे मृतकों में से जीवित किए जाने के बाद (प्रेरितों 2:24), वह बादलों के साथ स्वर्ग में उठा लिया गया (प्रेरितों 1:9-11) और "अति प्राचीन" परमेश्वर और उसके स्वर्गिक सिंहासन पर चला गया (दानिय्येल 7:9, 10, 13)। वहाँ, उसने सनातन राज्य पर अधिकार प्राप्त किया, जो था, अब है और - "धरती के सभी कुलों" के लोगों से बना हुआ होगा (12:3; देखें मत्ती 28:18, 19; मरकुस 16:15, 16; प्रेरितों 2:38, 39)।

प्रतीकात्मक रूप से, दाऊद के सिंहासन पर परमेश्वर ने यीशु को अपने दाहिने हाथ बैठाया, भविष्यवाणी को पूरा करते हुए (49:10; प्रेरितों 2:29-36)। अब उसने प्रभु (सार्वभौम अधिपति) और मसीह (अभिषिक्त) के रूप में सनातन आत्मिक राज्य पर अपना शासन करना आरम्भ कर दिया है (कुलु. 1:12-14; इब्रा. 12:28) जो "धरती के सारे कुलों के लिए" आशीर्वाद लाता है (12:3)। यहूदा का गोत्र, जिसमें दाऊद और उसके वंशज शामिल हैं, यीशु मसीह को इस संसार में लाए (मत्ती 1:1-17)। इसको, परमेश्वर ने "समय पूरा होने पर" ही किया (गला. 4:4, 5) अब्राहम के निमित्त अपनी आत्मिक प्रतिज्ञा पूरी करने के लिए कि उसके वंश के द्वारा धरती के सारे कुल आशीर्वाद पाएँगे (गला. 3:16, 26-29)। यह महान आशीष मसीह के द्वारा आती है जो उसकी आज्ञा मानना पसंद करते हैं।

आशीषों का हस्तांतरित किया जाना (अध्याय 49)

परमेश्वर के लोग आज यीशु मसीह के द्वारा आज अब्राहम के आत्मिक वारिस हैं। जैसे कि, हमें हमारी भावी पीढ़ी और सभी लोगों के लिए आशीष बनना चाहिए। सामान्य रूप से पश्चिमी जगत में लोग याकूब की तरह आशीर्वादों को हस्तांतरित नहीं करते वह अपने पुत्रों को अपने आशीर्वाद देने में सीमित था (और उसके दो पोते जिनको उसने पुत्रों के रूप में गोद लिया था)। सामान्य विधि पर, प्राचीन मिडल ईस्ट में इसी तरह से भौतिक आशीषें विरासत में दी जाती थीं। पुत्रियों को आशीषों के बिना नहीं छोड़ा जाता था, परन्तु उनको आमतौर पर उनके पति की विरासत के द्वारा आशीषित किया जाता था।[33] आज जब माता पिता अपनी वसीयत बनाते हैं, वे अपनी सम्पत्ति, जायदाद और वित्तीय सम्पत्ति में अपने सारे बच्चों को चाहे लड़के हों या लड़कियाँ सबको हिस्सा देते हैं।

अब्राहम के द्वारा हस्तांतरित आशीषें। जब परमेश्वर ने अब्राहम को बुलाया, उसने उसे आशीषित करने की प्रतिज्ञा दी और उसे भी "आशीष होने के लिए आदेश दिया"[34] (12:2)। उसकी आशीषों को "धरती के सभी कुलों" तक फैलना था (12:3)। यहाँ तक कि इस धनी कुलपति के पास पर्याप्त भौतिक आशीषें नहीं थीं कि वह अपने आस-पास प्रत्येक को अपनी अशीष में सहभागी करे। परमेश्वर के आदेश का विचार यह था कि विश्वास के जन होने के नाते, अब्राहम को दूसरे लोगों के साथ भलाई करने के द्वारा एक धार्मिक आदर्श प्रस्तुत करना चाहिए। उसे ज़रूरतमंद लोगों के प्रति उदार होना था।

अब्राहम ने हमेशा अपनी बुलाहट के अनुसार जीवन नहीं जीया था। जब उसने सारा के सम्बन्ध में झूठ बोला, तो वह मिस्र में फ़िरौन के घराने पर आशीष लाने की बजाए विपत्तियाँ लाया (12:14-20)। परन्तु, ऐसा दिखाई देता है कि उसने उस अनुभव से एक महत्वपूर्ण सबक सीखा।

कुलपति को आशीषित होने का अगला अवसर पाने के लिए लम्बे समय तक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। खतरा शीघ्र ही मेसोपोटामिया से चार राजाओं की ओर से क्षितिज में दिखाई देने लगा। उन्होंने यरदन घाटी और कनान के दक्षिण-पूर्वी क्षेत्र पर आक्रमण कर दिया, जीतते गए और एक के बाद एक नगर को लूटते गए। जब अब्राहम ने सुना कि मेसोपोटामिया से आक्रमणकारियों ने लूत, उसके परिवार और सदोम और अमोरा के निवासियों को अपने कब्ज़े में कर लिया है, कुलपति ने अपने 318 योद्धा और घर में जनमे दासों जिनके पास हथियार थे और अपने अमोरी संगियों को साथ लेकर उनका पीछा किया। इस मिली जुली सेना ने आक्रमणकारियों को दबा लिया और कब्ज़ा किए गए लोगों को वापिस लाए, जिसमें लूत और उसका परिवार साथ में उनकी सारी सम्पत्ति भी (14:14-16)।

जब बन्दी बनाए हुए यरदन घाटी के क्षेत्र में आए जहाँ से वह लिए गए थे तो मलिकिसिदक, जो सालेम का राजा[35] और सर्वोच्च परमेश्वर का याजक था,

उसने वापिस आए हुए लोगों को रोटी और दाखमधु दिया और उनको दुखद अग्नि परीक्षा के बाद आराम मिला। तब उसने अब्राहम को आशीषित किया क्योंकि वह और उसके पुरुष उसके लिये आशीष का कारण रहे थे। उन्होंने न केवल लूत और उसके परिवार को ही छुड़ाने के लिए, बल्कि सदोम और अमोरा के लोगों के लिए भी खतरा मोल लिया, भले ही कुलपति के लिए उनकी जीवनशैली कितनी ही घिनौनी रही थी (18:16-19:29)।

अब्राहम ने परमेश्वर के इस जन को उसकी सेना के द्वारा लाई गई आक्रमणकारियों से प्रत्येक वस्तु में से दशमांश दिया (14:17-20)। सदोम के राजा के द्वारा प्रस्तावित की गई उसने कोई वस्तु नहीं ली। उसे युद्ध से लाई गई किसी भी वस्तु की ज़रूरत नहीं थी, क्योंकि वह तो पहले ही से धनी पुरुष था। इसके साथ ही साथ, वह इस अधर्मी को राजा को ऐसा कोई अवसर नहीं देना चाहता था कि जिससे वह घमण्ड करे कि अब्राहम उसके द्वारा धनी हुआ है। उसकी एक ही इच्छा थी कि उसके साथ योद्धाओं को भोजन खिलाया जाए। फिर भी, उसने अन्य लोगों को यह कहते हुए आशीषित किया कि लाई गई सारी लूट को अमोरी संगियों को दी जाए जिन्होंने मेसोपोटामिया सेना को जीतने में बहुत बड़ा योगदान दिया था (14:21-24)।

यीशु के द्वारा हस्तांतरित आशीर्वाद। वे गुण जो प्रत्येक व्यक्ति में स्पष्ट दिखाई देते है जिन्हें भलाई के रूप में देखा जाता है वही गुण यीशु मसीह ने अपने रोज़ाना के जीवन में दर्शाए। उसके पास अपने शिष्यों के साथ पीछे छोड़ने के लिए भौतिक-पदार्थ या विरासत कुछ नहीं थी जब वह स्वर्ग पर उठा लिया गया था। उनके लिए उसकी विरासत थी पवित्रात्मा (यूहन्ना 14:16-18, 26; 15:26, 27; 16:7-14)। पवित्रात्मा के द्वारा, हम उसकी आत्मिक आशीषों की भरपूरी पा सकते हैं और उसके स्वरूप में ढल सकते हैं (प्रेरितों. 2:38; 2 कुरि. 3:17, 18; गला. 4:6; इफि. 1:3)। इस संसार में जीवन जीने के दौरान हम अपनी विरासत का आनन्द उठाने लगते हैं जब हम "आत्मा का फल": "प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज, और कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता, और संयम" (गला. 5:22, 23) का अनुभव प्राप्त करते हैं।

यीशु की प्राथमिक सेवा उन लोगों को ढूँढना और बचाना था जो खोये हुए थे, परन्तु उसने ऐसा अकसर दलित लोगों को उत्साहित करने के द्वारा किया। एक अवसर पर, यीशु ने अपनी सेवा के स्वभाव सम्बन्धित यशायाह नबी से हवाला दिया "वह कुचले हुए सरकंडे को न तोड़ेगा; और धुआं देती हुई बत्ती को न बुझाएगा" (मत्ती 12:20; NIV; देखें यशा. 42:3)। एक सरकंडा टूटा हुआ और धूल में कुचला हुआ आशाहीन ही मर जाता है। प्रभु यीशु पापियों को कुचलने नहीं आया था, परन्तु उन्हें कोमलता से उठाकर नये जीवन में लाने के लिए आया।

इस तरह से यह आग के अवशेष की तरह है जो धुआं देती हुई बत्ती में रहता है। यह सरलता से बुझाई जा सकती है; परन्तु, यदि कोई व्यक्ति आराम से उस पर फूँके तो आग की लपट फिर उठ सकती है। वह फरीसी लोग जिस कठोर रीति

से व्यवस्था की व्याख्या करते थे, उससे लोगों की आत्माएं बुझ जाती थीं। उनको परमेश्वर की सेवा करने के लिए उत्साहित करने की बजाए, ये धार्मिक नेता उन पर कठोर और क्रूर थे। वे अपनी परम्परा से अलग जानेवाली की हर बात की निन्दा करते थे, जैसे, जब यीशु ने सब्त के दिन सूखे हाथ वाले व्यक्ति को चंगा किया था (मत्ती 12:9-14)। व्यवस्था की इन कठोर व्याख्याओं के विपरीत, यीशु चाहता था कि उसके शिष्य स्नेहमय, दूसरों का ध्यान रखने वाले, विनम्र, दयालु, उपकारी और उन लोगों को उत्साहित करने वाले हों जिनको आशा की ज़रूरत थी। यीशु ने इन गुणों को आम लोगों की भीड़ में दर्शाया जिनकी उसने सेवा की। जबकि फरीसियों ने उन्हें पापी जानकर छोड़ दिया था (मत्ती 9:9-13), यीशु ने उन्हें आशीषित किया (मत्ती 5:1-10), उन्हें उत्साहित किया, और अपनी सांसारिक सेवा के दौरान ऐसे लोगों को चंगा किया (मत्ती 4:23; 12:9-13; 25:34-40)।

मसीहियों के द्वारा हस्तांतरित आशीषें। आरम्भिक कलीसिया ज़रूरतमंद विधवाओं के लिए प्रावधान करने के द्वारा यीशु के गुणों को दर्शाने के लिए जानी जाती थी (प्रेरितों. 6:1-6) अपना भोजन और अपनी धन-सम्पत्ति में सहभागी बनाने से (प्रेरितों. 2:43-47)। एक व्यक्ति जो इस सम्बन्ध में जाना पहचाना था वह था यूसुफ़, एक लेवी, जिसने अपनी ज़मीन बेची और वह सारा धन लाकर ज़रूरतमंद लोगों की सेवा करने के लिए प्रेरितों के पाँवों में लाकर रख दिया। उसे एक नया नाम "बरनबास" दिया जिसका अर्थ है "शान्ति का पुत्र" (प्रेरितों. 4:36, 37)।

जब यरूशलेम में भाइयों ने सुना कि अंताकिया में कई यूनानी लोगों ने "विश्वास किया है" और "प्रभु की ओर मुड़ आए हैं," तब उन्होंने बरनबास को वहाँ भेजा। "वह बड़ा आनन्दित हुआ और उनको उत्साहित करने लगा" कि वे प्रभु के प्रति सच्चे बने रहें, "वह एक भला मनुष्य था और पवित्रात्मा से परिपूर्ण था" (प्रेरितों. 11:21-24)। यह वर्णन बरनबास को बहुत आदर देता है। उसमें आत्मिक गुण थे जो इस नई यहूदी/अन्यजाति कलीसिया को "मेल के बन्ध में आत्मा की एकता रखने का यत्न करने में" (इफि. 4:3) सहायता करेंगे ज्यों-ज्यों वे विश्वास में दृढ़ होते जाएँगे।

मसीही लोग यीशु से कोई भौतिक विरासत प्राप्त नहीं करते। उसके पुरखाओं (अब्राहम, इसहाक और याकूब) से भिन्न, उसने अपने शिष्यों को किसी भी भौतिक आशीष की प्रतिज्ञा नहीं दी। इसके बजाए वह हमें शान्ति की नई भावना, प्रतिष्ठा और आत्मिक आशीषें प्रदान करता है। यीशु "वह भलाई करता, और सब को जो शैतान के सताए हुए थे, अच्छा करता फिरा" (प्रेरितों. 10:38)। उसके सम्पूर्ण जीवन ने एक उदाहरण दिया कि परमेश्वर के कहने का अर्थ क्या था जब उसने अब्राहम को "आशीष होने के लिए" कहा, और हमें उसी तरह से जीवन व्यतीत करना है। जब हम, परमेश्वर के लोग होने के नाते, अन्याय से घृणा किए जाते, अपमानित किए जाते और सताए जाते हैं तो हमें वही करना चाहिए जो यीशु ने किया। हमें किसी प्रकार का पलट कर वार नहीं करना है परन्तु इसके

बजाए "आशीष" देनी है (1 पतरस 3:9)।

परमेश्वर ने सच्च में ही "धरती के सारे कुलों को" कुलपतियों के भौतिक और आत्मिक वंशजों के द्वारा आशीष दी है, जो मसीह के आने में पूरी होती हैं (12:2, 3; गला. 3:14, 16, 26-29)। हम मसीही होने के नाते अपनी विरासत में आनन्द कर सकते हैं (1 पतरस 4:12-16)।

अगुवे पाप के द्वारा अयोग्य ठहरे (49:3-7)

पापी कार्य लोगों को अगुआई के पद से अयोग्य ठहरा सकते हैं (49:3-7)। यह दण्ड आशीषों में देखा गया जो याकूब ने अपने पुत्रों पर उच्चारित कीं।

कुलपति के समय में आशीषों का देना महत्वपूर्ण था, परन्तु पहिलौठे का अधिकार या मृत्यु शय्या आशीष का अधिकार पाना यह अपने आप नहीं होता था। न ही मृत्यु शय्या आशीष हमेशा ही आशावादी ही होती थी। जबकि एक पिता सम्पत्ति, समृद्धि और पारिवारिक अगुआई अपने वंशजों पर देता था, वह नकारात्मक आशीषें (श्राप) भी प्रकट कर सकता था जो बताती थी कि जो उसके पुत्र ने बुरे कार्य किए हैं उसकी कीमत उसे चुकानी होगी। एक भाव में, आशीषें नबूवतें होती थीं कि प्राप्त करने वाले के जीवन में या भविष्य में उनके वंशजों पर क्या प्रकट होगा।

पहली मुख्य आशीष प्रायः पहिलौठे पुत्र को उसके पहिलौठे के अधिकार के रूप में जाती थी, और यह विरासत में उसे और वंशज को धन सम्पत्ति का दोगुना भाग मिलता था। इस सम्बन्ध में याकूब ने रूबेन को चुना। सार्थक आशीषों के स्थान पर उसने उसे नकारात्मक आशीषें (श्राप) दीं क्योंकि उसने बिल्हा के साथ कुकर्म किया था (35:22; 49:3, 4)। इसलिए, न तो रूबेन और न ही उसके गोत्र को याकूब की सम्पत्ति का दोगुना भाग मिला (1 इतिहास 5:1)। इसके स्थान पर यूसुफ़ को दुगना भाग दिया गया, जिसे उसके दोनो पुत्रों, एप्रैम और मनश्शे ने प्राप्त किया (48:15-22; 49:22-26)।

याकूब ने उसी तरह से नकारात्मक आशीषें अपने दूसरे और तीसरे पुत्रों शिमोन और लेवी को भी दी, शकेम में उनके जानलेवा क्रोध के कारण (34:24-31; 49:5-7)। उनके परिवारों को कनान देश में भी ज़मीन नहीं मिली, इसके बजाए वे इस्राएल के लोगों में बिखर गए थे (49:5-7)। शिमोन के वंशज यहूदा की दी गई ज़मीन के सिवानों पर बस गए थे और अन्ततः उनके अपने गोत्र की पहचान लुप्त हो गई (यहोशू 19:9)। लेवी बारह गोत्रों में तितर-बितर थे, और वे कनान देश के 48 याजकीय नगरों में रहते थे (यहोशू 21:41)।

अपने पहले तीन पुत्रों में से किसी को भी पहिलौठे की आशीष देने से इनकार, याकूब ने - चाहे जाने या अनजाने - में परमेश्वर के पूर्व उदाहरण का अनुसरण किया, जिसने कैन को मानवता के परिवार से अपने भाई हाबिल की हत्या करने के कारण से निकाल दिया था। चाहे आशीषें या विशेषाधिकार की उसने आदम और हव्वा का पहलौठा होने के नाते आशा रखी होगी, कैन ने सब कुछ गंवा दिया जब परमेश्वर ने उसे अपने "भाई के लहू" को छिपाने के प्रयास में

श्रापित किया (4:11)। अपने पिता आदम के मरने के बाद कैन में मानवता की अगुआई करने के लिए उचित गुण नहीं थे। उसने अपने भाई की हत्या करने पर न ही दुख व्यक्त और न ही वह दुखी हुआ कि उसने अपने भाई की हत्या कर दी; इसके बजाए उसका अक्खड़ व्यवहार था और स्वयं को ईश्वरीय अन्याय का शिकार होने के रूप में देखा, और कहा, "मेरा दंड सहने से बाहर है" (4:13)।

परमेश्वर ने हमेशा ही अपने लोगों के लिए उचित अगुआई की इच्छा की है। इतिहास को इस संक्षिप्त कथन में सारांश किया जा सकता है "जैसे अगुवा चलता है, वैसे ही कौम चलती है।" परिवार, कबीले, जनजाति, कलीसिया या सरकार के अगुवे सम्बन्धी यह कथन बिलकुल सही है। जब लोगों के पास कैन जैसे अगुवे हों, जिनका परमेश्वर के प्रति क्रोधी अक्खड़ व्यवहार हो और मनुष्य के प्रति तिरस्कार रखता हो, तो परिणाम हमेशा दुखद ही होते हैं। बुरे व्यवहार और कामों की विरासत अकसर आने वाली पीढ़ियों में हस्तांतरित होती है, जैसा कि कैन से लेमेक में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। वह कैन के बाद का वंश और आदम से सातवीं पीढ़ी का था। अपने पूर्वज की तरह उसने परमेश्वर के आदेशों या इरादों पर कोई ध्यान नहीं दिया। परमेश्वर के विवाह के एक पत्नी के प्रारूप मनुष्य और उसकी पत्नी के बीच के सम्बन्ध को अनदेखा करते हुए (2:24), लेमेक ने दो पत्नियाँ लीं (4:19)। फिर उसने न केवल एक व्यक्ति की हत्या ही की परन्तु इसके विषय पत्नियों से अपनी बड़ाई भी की (4:23, 24)।

दुष्ट अगुआई के विनाशकारी स्वभाव के उदाहरण को हम यूहन्ना की तीसरी पत्री में देखते हैं, जो कि पहली शताब्दी की मसीही मण्डली को लिखी गई। कलीसिया में दो अगुवे (सम्भवतः प्राचीन) विरोधी दिशा में भाइयों को प्रभावित करने का प्रयास करते हुए दिखाई दे रहे थे। पहला धर्मी भाई, गयुस जिसे वृद्ध प्रेरित ने "सत्य पर चलने" का आदेश दिया (3 यूहन्ना 4)। दूसरा था दियुत्रिफेस, जो कि प्रत्यक्ष रूप में वह या तो गूढ़ ज्ञानी मसीही था[36] या वह गूढ़ ज्ञानी विचारों की सहानुभूति प्रकट करनेवाला व्यक्ति था। प्रकट रूप से, उसने दावा किया कि उसने परमेश्वर को देखा है और वह परमेश्वर के सच्चे स्वभाव को समझता है। वह मण्डली में प्रधान पद पाने का अभिलाषी था; और जो लोग उससे असहमत होते थे उन्हें "मण्डली से बाहर निकाल देता" था (3 यूहन्ना 10, 11)।

यूहन्ना ने कुछ विश्वासयोग्य भाइयों के हाथ से गयुस को एक पत्र लिखकर भेजा और इसे कलीसिया के सामने पढ़ा जाना था। परन्तु दियुत्रिफेस ने न ही भाइयों को ग्रहण किया और न ही वह पत्र मण्डली में पढ़ने दिया क्योंकि वह यूहन्ना की शिक्षा का विरोध करता था (3 यूहन्ना 9)। अस्वीकृत किया गया पत्र यूहन्ना की दूसरी पत्री या इसके समान कोई पत्र हो सकता है, जो गूढ़ ज्ञान की निन्दा करता था, गूढ़ ज्ञानी जो इस बात का इनकार करते थे कि यीशु मसीह शारीरिक रूप में इस संसार में आया था। यूहन्ना ने कहा कि ऐसे "धोखा देनेवाले" और मसीह विरोधी व्यक्तियों न तो घर में आने दो और न नमस्कार करो। भ्रमित लोगों के बुरे कामों में सहभागी होने का भी बहुत बड़ा खतरा था (2 यूहन्ना 7-

11)। यूहन्ना के शब्द कठोर दिखाई देते थे, परन्तु गूढ़ ज्ञान का मतान्तर मसीह की देह में कैंसर रोग के समान था, जिसको हटाना ज़रूरी था। यीशु का देह धारण मसीहयत की आधारभूत सच्चाई है; मानवता के लिए परमेश्वर का प्रेम इतना महान है कि वह हकीकत में ही यीशु मसीह व्यक्ति के रूप में मानव इतिहास में उतर गया और कष्ट भोगने के लिए और पापियों को बचाने के लिए अपने प्राण दे दिए (यूहन्ना 3:16; 2 कुरि. 5:19-21; 1 तीमु. 1:15)।

दियुत्रिफेस का स्वभाव उस स्वभाव के विरुद्ध था जो आत्मिक अगुओं में परमेश्वर चाहता है। उसका स्वभाव यहूदी सभा-गृहों के फरीसी अगुओं के समान था, जिन्होंने उस व्यक्ति के विषय अपने मन और आँखों को बन्द कर लिया था जो जन्म से अन्धा था और यीशु के द्वारा चंगा हुआ था। उन अगुओं ने उस व्यक्ति की साक्षी पर भरोसा नहीं किया था परन्तु वे इसका खंडन भी नहीं कर सके, इसलिए उन्होंने उसे यहूदी सभा गृह से "बाहर निकाल दिया" (यूहन्ना 9:34)। उसी तरह से, दियुत्रिफेस भी यीशु मसीह के स्वभाव के विषय यूहन्ना की शिक्षा को स्वीकार नहीं करता था। उसने कपटपूर्वक यूहन्ना का "दुर्वचनों के साथ" विरोध किया, और वे उसके साथ असहमत थे उनको कलीसिया से "बाहर निकाल दिया।"

यूहन्ना ने कहा कि वह व्यक्तिगत रूप से दियुत्रिफेस से मिलने आ रहा है (3 यूहन्ना 10)। हम नहीं जानते कि क्या खुलकर सामने आया होगा जब यूहन्ना आया होगा और इस झूठे शिक्षक और कलीसिया के अगुवे का सामना किया होगा। हो सकता है वह झूठ बोलने के कारण जैसे हनन्याह ने किया था मरकर गिर गया हो (प्रेरितों 5:5), या इलीमास की तरह जो टोन्हा करने वाला था अन्धा हो गया होगा जिसने पौलुस की शिक्षा का साइप्रस में विरोध किया था (प्रेरितों 13:11)। हम मात्र अनुमान ही लगा सकते हैं कि यह पूर्व "गर्जन के पुत्र" ने (मरकुस 3:17) परमेश्वर के लोगों के बीच परमेश्वर की सामर्थ के अपमान के विरुद्ध कड़ा कदम उठाया होगा। हम आशा कर सकते हैं कि दियुत्रिफेस इससे पहले देर हो जाती सबक सीख गया होगा, परन्तु अगुवे इतने घमण्डी भी हो सकते हैं कि वे अपने हृदय या जीवनशैली को बदलने की कोई गुंज़ाइश नहीं रखते। कुछ परमेश्वर के सामने विनम्र होने से इनकार करते हैं कि परमेश्वर उनको ऊँचा उठाए।

परमेश्वर की क्षमा: यहूदा की कहानी (49:8-12)

परमेश्वर के अनुग्रह से, अपने जीवन के आरम्भिक दिनों में किए गए दुष्ट कार्य हमेशा उसे अगुआई की पदवी में ऊँचा उठने में नहीं रोकते यदि वह परमेश्वर के सामने स्वयं को विनम्र करते हैं (49:8-12)। सम्पूर्ण पवित्र शास्त्र में मूल विचार यह रहा है कि परमेश्वर क्षमा करने और पछताने वाले विश्वासी को ऊँचा उठाने का इच्छुक है जो स्वयं को परमेश्वर के सामने विनम्र करते हैं और अपने किए हुए गलत कामों के लिए परमेश्वर से क्षमा मांगते हैं। हृदय में इस तरह का बदलाव कभी भी आसान नहीं होता, और कभी-कभी यह बहुत संघर्ष

और कष्टों के बाद ही आता है। यही स्थिति याकूब के चौथे पुत्र यहूदा की थी।

अपनी जीवन की आधी शताब्दी के दौरान, याकूब के पुत्रों में अगुआई के लिए यहूदा सबसे अन्तिम और कम से कम होने वाली सम्भावना का प्रत्याशी रहा होगा। इसे सबसे पहले यूसुफ़ के साथ उसके व्यवहार में देखा जा सकता है, जो उसका अपना भाई था। समय की बीतने के बाद, यहूदा और उसके भाइयों की घृणा यूसुफ़, याकूब के प्रिय पुत्र के प्रति बढ़ती चली गई। उन्होंने इस तथ्य को तुच्छ जानना कि उसने विशेष व्यवहार पाया और अपने पिता के द्वारा दिए गए मूल्यवान वस्त्र पहनता था (37:3, 4)। भाइयों ने यूसुफ़ के सपनों को भी नहीं सराहा था, जिनका अर्थ था कि एक दिन वे उसके आधीन होंगे (37:5-11)। जब अवसर आया, उन्होंने सबसे पहले उसे घात करने का विचार किया (37:12-24)। तब उन्होंने मिद्यानी व्यापारियों को अपने पास से गुज़रते हुए देखा जो मिस्र जा रहे थे। यहूदा ही वह व्यक्ति था जिसने संवेदनहीनता से सुझाव दिया था कि वे यूसुफ़ को दासत्व में बेचकर पैसा बना सकते हैं (37:25-28)।

यहूदा प्रत्यक्ष रूप से हठी युवा पुरुष था, क्योंकि उसने अपना घर छोड़ दिया और अपने पिता की सहमति या आशीष के बिना, कुलपति प्रथा के विपरीत मूर्तिपूजक कनानी स्त्री से विवाह कर लिया था (38:1, 2)। उस मेल से, यहूदा और उसकी पत्नी से तीन पुत्र हुए। यहूदा ने अपने पहिलौठे पुत्र एर का विवाह कनानी युवा कन्या तामार से किया। परन्तु, एर इतना दुष्ट था कि परमेश्वर ने उसके प्राण ले लिए (38:6, 7)। तब, प्राचीन लेविरैट प्रथा के अनुसार, यहूदा ने अपने दूसरे पुत्र ओनान को अपनी भाई की पत्नी का पति बनने के लिए दे दिया ताकि उससे उत्पन्न संतान एर की संतान कहलाए और विरासत में से अपना भाग प्राप्त करे। इस तरह का बच्चा तामार के लिए भी प्रावधान करने का साधन होगा, एर की विधवा होने के नाते, बाद के जीवन में। परन्तु ओनान भी दुष्ट था। उसने अपने मृतक भाई की पत्नी का यौन-संतुष्टि के लिए ही प्रयोग किया, परन्तु उसने उसे गर्भवती नहीं होने दिया। इसलिए, परमेश्वर ने उसके प्राण ले लिए (38:8-10)। इस समय, यहूदा को समझ नहीं आ रही थी कि वह तामार, अपनी बहू का क्या करे, जो पहले ही दो बार विधवा हो चुकी है। उसका तीसरा पुत्र था शेला; परन्तु उसे भय था कि तामार एक श्राप है और यदि उसका विवाह उसके तीसरे पुत्र से कर दिया तो कहीं वह भी न मर जाए। इसलिए उसने तामार को अपने पिता के घर जाने के लिए कह दिया और जब तक उसका पुत्र शेला सियाना नहीं हो जाता तब तक वहीं अपने पिता के घर में ही रहे (38:11)।

जैसे ही समय बीता, यहूदा की पत्नी की मृत्यु हो गई और तामार ने जान लिया कि उसके ससुर का उसे शेला को पति के रूप में देने का कोई इरादा नहीं है। इसी निराशा में, उसने एक कुटिल योजना के लिए अपने चेहरे पर घूँघट डाल लिया और वेश्या का रूप धारण कर लिया और जब यहूदा भेड़ों की ऊन कतरने के उत्सव के लिए तिम्नाथ को जा रहा था, तामार उसके मार्ग में आकर बैठ गई। जैसा तामार ने सोचा था, यहूदा ने पास से गुज़रते हुए उसे देखा और उसने

समझा कि यह कोई वेश्या है, और उसने उसके साथ यौन सम्बन्ध बनाने का प्रस्ताव रखा। क्योंकि इस काम के भुगतान के लिए उसके पास देने को कुछ भी नहीं था, उसने भुगतान के रूप में उसे एक बकरी का बच्चा देने का वादा किया। परन्तु तामार बड़ी चालाक थी उसने उससे रेहन रखने के लिए मांग लिया उसकी मुहर, बाजू बन्द और हाथ की छड़ी। उसे बकरी के बच्चे की कोई चिन्ता नहीं थी (38:12-18); वह तो बस इसी अवसर की तलाश में थी कि उसके पुत्र हो जाए।

जब यहूदा ने उस स्त्री को जिसे वह वेश्या समझ रहा था भुगतान करने का प्रयास किया, वह वहाँ नहीं मिली। तीन महीनों के गुज़रने के बाद, यहूदा ने सुना कि तामार ने व्यभिचार किया है और गर्भवती हो गई है। उसने क्रोध से भरकर मांग की कि उसे बाहर लाया जाए और वह जलाई जाए, परन्तु उसने अपने ससुर को एक संदेश भेजा "जिस पुरुष की ये वस्तुएं हैं, उसी से मैं गर्भवती हूँ" (38:25)। जब यहूदा ने अपनी मुहर, बाजू बन्द और अपनी छड़ी देखी तो वह अपने ही पाप के प्रति निरुत्तर हो गया और कहा, "वह तो मुझ से कम दोषी है" (38:26)। वह जान गया कि उसी ने उसे ऐसा काम करने के लिए मजबूर किया क्योंकि उसने अपने पुत्र शेला को उसे पति करके देने में इनकार किया। इस दुखद घटना के बाद, यहूदा ने तामार का आदर किया और फिर कभी उसने उससे शारीरिक सम्बन्ध नहीं बनाए (38:26)। लगभग 6 महीनों के बाद, उसने जुड़वां बच्चों पेरेस और जेरह को जन्म दिया (38:29, 30)।

हम यहूदा के जीवन के विषय कम ही जानते हैं, इसी दौरान कई वर्षों के बाद, जब दक्षिण-पूर्व मेडिटेरेनियन जगत में एक भयंकर अकाल फैल गया। इस अकाल ने यहूदा और याकूब के अन्य[9] पुत्रों के लिए मिस्र जाने का अवसर पैदा कर दिया। आस-पास के क्षेत्र के कई लोगों की तरह, अनाज खरीदने के लिए उन्हें मिस्र यात्रा करनी पड़ी (41:53-57)। अनाज की ज़रूरत ने यहूदा के लिए याकूब के परिवार की अगुआई करने में उभरने का अवसर प्रदान किया।

अकाल के कारण अपने परिवार को संकट में देखते हुए, यहूदा का हृदय बदलने लगा। वह अब पहले अपने विषय नहीं सोचता था; इसके बजाए वह समझने लगा कि परिवार का जीवित रहना और उसके पिता की मानसिक और शारीरिक सुख उसके अपने हित से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। यह बात उस समय स्पष्ट हो गई जब भाई मिस्र देश में अनाज खरीदने के लिए गए और मिस्री शासक (यूसुफ़) ने शिमोन को इस बात की जमानत के रूप में कैद कर था कि जब उनको और अनाज की ज़रूरत होगी तब बाकी भाई बिन्यामीन को लेकर वापिस आएँ। जब यहूदा और उसके भाई कनान वापिस आए और उन्होंने अपनी पिता को सारा विवरण बताया, याकूब ने इस विचार का सीधे ही सामना किया। वास्तव में, उसने इस बात को प्रकट किया कि उसकी इन परेशानियों के उसके पुत्र ही ज़िम्मेदार हैं। उसने कहा, "मुझ को तुम ने निर्वंश कर दिया, देखो, यूसुफ़ नहीं रहा, और शिमोन भी नहीं आया, और अब तुम बिन्यामीन को भी ले जाना चाहते हो: ये सब विपत्तियां मेरे ऊपर आ पड़ी हैं" (42:36)।

याकूब ने बिन्यामीन को भाइयों के साथ वापिस मिस्र जाने के लिए कठोरता

से मना कर दिया, जब तक कि सारा अनाज समाप्त नहीं हो गया और परिवार भुखमरी का सामना करने लगा। तब यहूदा ने अपने पिता के साथ मध्यस्थता करके, विनती की, "उस लड़के को मेरे संग भेज दे, कि हम चले जाएं; इस से हम, और तू, और हमारे बाल बच्चे मरने न पाएंगे, वरन जीवित रहेंगे" (43:8)। फिर उसने कहा, "मैं उसका जामिन होता हूं; मेरे ही हाथ से तू उसको फेर लेना यदि मैं उसको तेरे पास पहुँचाकर सामने न खड़ा कर दूं, तब तो मैं सदा के लिये तेरा अपराधी ठहरूंगा" (43:9)। अन्त में, यहूदा अपने से बढ़कर दूसरों की चिन्ता सामने रखता है। वह अपने ऊपर ज़िम्मेदारी लेने को तैयार था यदि बिन्यामीन को कुछ हो जाता है। याकूब नरम पड़ गया और बिन्यामीन को अपने भाइयों के साथ अनाज खरीदने के लिए मिस्र देश में भेजने के लिए राज़ी हो गया; और उसने उनके साथ बलसान, मधु, सुगन्ध द्रव्य, गन्धरस, पिस्ते और बादाम उपहार में भेजे इसके साथ ही साथ उसने वह दुगना पैसा भी साथ भेजा जो पहली बार अनाज खरीदने गए भुगतान किया था। इससे पहले कि वे वहाँ से रवाना होते, याकूब ने जुदा होते हुए यह आशीर्वाद दिया "और सर्वशक्तिमान ईश्वर उस पुरुष को तुम पर दयालु करेगा, जिस से कि वह तुम्हारे दूसरे भाई को और बिन्यामीन को भी आने दे: और यदि मैं निर्वंश हुआ तो होने दो" (43:14)। यहूदा के प्रभाव के कारण, याकूब अपने परिवार की ज़रूरत के लिए अपनी इच्छाओं का त्याग करने के लिए सहमत हो गया; परन्तु उसने प्रार्थना की कि किसी भी बलिदान की ज़रूरत नहीं है और परमेश्वर उसके पुत्रों को वापिस घर लाएगा। इसके साथ उसने कहा, भाई और अनाज खरीदने के लिए मिस्र वापिस गए और बिन्यामीन उनके साथ था।

यहूदा की अगुआई में, भाई मिस्र वापिस गए, मात्र यह देखने के लिए कि उनको फिर परखा जाएगा। वे उसके प्रति अज्ञात थे, यूसुफ़ अभी भी यह देखने का प्रयास कर रहा था कि क्या इनके मन बदले हैं, यदि उनको सच्च में उसे दासत्व में बेचने का दुख था, और यदि वे दोबारा एक परिवार हो सकें। दूसरी बार, उन्होंने अपने अनाज के बोरों में रुपया पाया और बिन्यामीन के बोरे में चाँदी का प्याला पाया गया (44:1, 2)। एक बार फिर भाई अपराधी ठहरे। शासक के सेवक ने एक सामान्य बात कही कि उन्होंने भलाई के बदले बुराई दी है, परन्तु विशिष्ट दोष बड़ा गम्भीर था चाँदी के उस प्याले की चोरी जो सम्भवतः शकुन विचार के लिए प्रयोग किया जाता था। सेवक ने कहा कि जिसके पास स्वामी का वह प्याला मिलेगा वही शासक का दास बनेगा, जबकि बाकी वापिस जाने के लिए स्वतन्त्र थे। भले ही प्याला बिन्यामीन के बोरे में से मिला था, सभी भाई नगर वापिस आ गए, और मिस्री शासक, यूसुफ़ के सामने झुक गए (44:12, 13)।

यहूदा ने इस बात को स्वीकारा कि वे अपनी सफाई में कुछ नहीं कह सकते; उसने विश्वास किया कि परमेश्वर उनकी बुराई का बदला उन्हें दे रहा है। इसलिए उसने कहा कि हम सब के सब अपने प्रभु के दास ही हैं। परन्तु, उच्चाधिकारी ने इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया; उसने निश्चय किया कि बिन्यामीन

ही उसका दास होकर रहेगा, और बाकी भाई अपने पिता के पास वापिस जा सकते हैं। यहूदा ने बड़ी विनम्रता से मिस्री शासक से विनती की, उसे बताया कि बिन्यामीन अपने पिता की बुढ़ापे की संतान है और इसके एक ही भाई है, जिसकी मृत्यु (यूसुफ़) हो चुकी है। उसने कहा, "अब अपनी माता का अकेला ही रह गया है, और उसका पिता उस से स्नेह रखता है" (44:20)। उसने शासक को बताया कि उनके पिता ने बिन्यामीन को उनके साथ आने के लिए बड़ी कठिनाई से अनुमति दी थी क्योंकि उसका प्राण अपने छोटे पुत्र के साथ बंधा हुआ है यदि इसको कुछ हो गया तो वह मर जाएगा। अन्त में, यहूदा ने प्रकट किया कि वह इस बच्चे का जामिन हुआ है और प्रतिज्ञा दी है कि वह अपराधी ठहरेगा यदि उसको सुरक्षित घर वापिस नहीं लाया। उसने बलवन्त शासक से कहा कि उसे मिस्र में अपना दास बनकर रहने दे और बिन्यामीन को अपने बाकी भाइयों के साथ सुरक्षित पिता के पास घर जाने दे। उसने यह भी कहा, "क्योंकि लड़के के बिना संग रहे मैं क्योंकर अपने पिता के पास जा सकूंगा; ऐसा न हो कि मेरे पिता पर जो दुःख पड़ेगा वह मुझे देखना पड़े" (44:34)।

इस अन्तिम कथन के साथ यहूदा, जिसने अपने भाइयों को यूसुफ़ को दास होने के लिए बेचने को कहा था, उसने यूसुफ़ इस बात का आश्वासन दिया कि वह अब वैसा स्वार्थी और घिनौना व्यक्ति नहीं है जैसे वह पहले जाना जाता था। समय के साथ-साथ वह समझदार हो गया था।

जब यहूदा और उसके भाइयों ने यूसुफ़ के क्षमादान को सुना कि उनको अब दुख नहीं मनाना चाहिए या अपने आप पर क्रोध नहीं करना चाहिए जो उन्होंने उसे दासत्व में बेच दिया था, वे सभी इस बात पर खामोश थे। यूसुफ़ ने कहा, "परमेश्वर ने तुम्हारे प्राणों को बचाने के लिये मुझे आगे से भेज दिया है" (45:5), परन्तु भाइयों के लिए यह बड़ा झटका था कि उसे परमेश्वर के दिव्य प्रावधान को उन्हें समझाने के लिए तीन बार दोहराना पड़ा।

अन्त में, यह बात स्पष्ट हो जाती है क्यों याकूब परमेश्वर के द्वारा मार्गदर्शित किया गया कि वह यहूदा और यूसुफ़ को मृत्यु शय्या के बड़े आशीर्वाद दे। इस विवरण में यहूदा का कारण प्रस्तुत करना बिन्यामीन को जीवन भर के दासत्व से बचाना था। वह यह जानता था कि जब वे घर पहुँचेंगे और उनके साथ राहेल का पुत्र बिन्यामीन नहीं होगा तो उसका पिता दुख के मारे मर जाएगा।

जो बलिदान यहूदा ने प्रस्तावित किया वह स्वाभाविक रूप से ऐसा था जो दूसरे के स्थान पर किया जाता है, एक प्रकार से यीशु मसीह के बलिदान का पूर्वाभास था। निस्संदेह, मसीह का प्रतिस्थापन बलिदान इससे कहीं बढ़कर था। उसने अपनी इच्छा से दीन बनकर इस संसार में दास का रूप धारण कर लिया, और उसने स्वयं कष्ट और क्रूस की मृत्यु को हमारे स्थान पर लेने का चयन किया। वह हमारे पापों के लिए मर गया ताकि हम पाप और मृत्यु के दासत्व से मुक्त हो जाएँ और स्वर्ग में हमारे पिता के घर में जाएँ।

यहूदा का उदाहरण - और, एक श्रेष्ठ भाव में, यीशु का उदाहरण हमें याकूब के मन में अलग प्रकार से मिलता है जब उसने कहा, "प्रभु के सामने दीन बनो,

तो वह तुम्हें शिरोमणि बनाएगा" (याकूब 4:10; देखें 4:6)। परमेश्वर ने यूसुफ़ को मिस्र में अपने लोगों को शारीरिक रूप से बचाने के लिए खड़ा किया, और उसे वंशज ने प्रतिज्ञा के देश में अपनी विरासत का दोगुना भाग प्राप्त किया। उसी तरह से, उन आशीषों के द्वारा जो याकूब ने अपने पुत्रों को दीं, यहूदा को मिस्र में अपने परिवार के अगुवे के रूप में ऊँचा किया गया। आखिरकार, यहूदा के गोत्र से परमेश्वर ने इस्राएल का महान राजा दाऊद खड़ा किया। जब समय पूरा हुआ, परमेश्वर दाऊद के शरीर के अनुसार महानतम वंशज को भेजेगा अर्थात यीशु को जो मसीह और उद्धारकर्ता है, वह न केवल इस्राएल को ही बचाएगा परन्तु सारी कौमों के लोगों को बचाएगा। वे जो स्वयं को परमेश्वर की दृष्टि में विनम्र करते हैं परमेश्वर उनको अनंतकाल के लिए अपनी उपस्थिति में उठाएगा।

एक जीवन का सारांश (49:28-33)

खेलों का यह कथन, जो चाहे दौड़ के विषय में हो या खेल के विषय में, आम तौर पर सही है: "बात यह नहीं मायने रखती कि आपने कितना अच्छा आरम्भ किया है परन्तु आप समाप्त कैसे करते हैं यह मायने रखती है।" यह बात परमेश्वर के लोगों के जीवन में भी खरी उतरती है। याकूब ने अपने विश्वास के आचरण का इतना अच्छा आरम्भ नहीं किया था; जैसा कि हमने उत्पत्ति में देखा है, उसके आत्मिक जीवन में बहुत से उतार-चढ़ाव थे। परन्तु उसने समाप्त अच्छा किया उसके दो पुत्रों यूसुफ़ और यहूदा के जीवन में परमेश्वर के अनुग्रह के कार्य के कारण, परमेश्वर ने उन्हें अपने पिता के विश्वास के घटते हुए समय में फिर से जगाने में प्रयोग किया। याकूब का एकमात्र वर्णन विश्वास के महान अध्याय में मिलता है, इब्रानियों 11 में उसके जीवन के अन्त के विषय वर्णन करता है "विश्वास ही से याकूब ने मरते समय यूसुफ़ के दोनों पुत्रों में से एक-एक को आशीष दी, और अपनी लाठी के सिरे पर सहारा लेकर दंडवत किया" (इब्रा. 11:21; देखें उत्पत्ति 47:31)।

याकूब के आत्मिक संघर्षों के कई वर्ष परमेश्वर के लोगों को "पाप में लगे रहने" के बहाने के रूप में प्रयोग नहीं करने चाहिए, यह सोचते हुए कि परमेश्वर का अनुग्रह तो हमेशा ही भरपूर मात्रा में रहता है (रोमियों 6:1) और मृत्यु से पहले पश्चाताप के लिए पर्याप्त समय प्रदान करेगा। क्योंकि हमारे पास आनेवाले कल की कोई प्रतिज्ञा नहीं है, अपने विश्वास के आचरण का सही प्रत्युत्तर परमेश्वर की बुलाहट के लिए "आज" ही दे सकते हैं (इब्रा. 3:12-15)। यह पाप को एक तरफ हटाने को शामिल करता है जो हमारे भार को बढ़ाता है और हमें जाल में फंसाता है, और हमें "अपनी दृष्टि यीशु मसीह पर लगाए रखनी है," जो हमें विजयी होने के लिए लगातार उत्साहित करता है (इब्रा. 12:1, 2)।

मसीह के शिष्य हमेशा अपने विश्वास में दृढ़ नहीं होते थे। वह अकसर गलत समझते थे कि यीशु कौन है, वह क्या पूरा करना चाहता है, और वह उनसे क्या आशा रखता है। इसके स्थान पर सिंहासनों की आशा करते थे जहाँ उनको लोगों पर शासक के रूप में बैठाया जाएगा (मत्ती 20:20-28), यीशु चाहता था कि वे

ज़रूरतमंदों की सेवा करें, बीमारों के पास जाएँ (मत्ती 25:31-46), और यहाँ तक कि उनके पाँव भी धोएँ जो धूल भरी राहों से आते हैं (यूहन्ना 13:2-17)।

यीशु की शिक्षाओं ने उसके शिष्यों के सांसारिक दृष्टिकोण को अस्त-व्यस्त कर दिया; और जब यीशु को पकड़ा गया, वे सभी उसे छोड़ गए और रात के अन्धेरे में भाग गए। पतरस ने तो उसका इनकार भी कर दिया था (मत्ती 26:56, 74)। जब यीशु अभी कब्र ही में था, शिष्य भय के मारे दरवाज़ा बन्द करके बैठे हुए थे (यूहन्ना 20:19); उनका विश्वास तब तक नहीं जागा था जब तक कि यीशु तीसरे दिन जीवित होकर उनके सामने नहीं आया। उसका स्पर्श करने के बाद (लूका 24:33-43; यूहन्ना 20:19-25) और बहुत से अचूक प्रमाण देखने के बाद, उन्होंने जाना कि यीशु "मार्ग, और सत्य, और जीवन" ही था (यूहन्ना 14:6)। फिर, परमेश्वर के राज्य सम्बन्धी शिक्षा देने के 40 दिनों के समापन पर, यीशु ने उन्हें पवित्रात्मा के द्वारा ऊपर से सामर्थ की प्रतिज्ञा दी, जो उन पर आने वाली थी। उन्हें यरूशलेम, यहूदिया और सामरिया में और फिर "पृथ्वी की छोर तक" उसके गवाह होना था (प्रेरितों. 1:8)। उन्हें निर्देश देने के बाद, वह जैतून पहाड़ से उठा लिया गया और स्वर्ग पर चला गया (प्रेरितों. 1:9)।

प्रेरितों ने प्रार्थना और प्रतीक्षा में 10 दिन बिताए। फिर, पिन्तेकुस्त के दिन, जब पवित्रात्मा उन पर उतरा, उन्होंने अपने विश्वास के आचरण का एक नया पड़ाव यीशु मसीह को सारी कौमों का प्रभु और उद्धारकर्ता की घोषणा करते हुए आरम्भ किया (प्रेरितों. 2:1-4, 22-42)। वे प्रभु यीशु की व्यक्तिगत सेवा के तीन वर्षों के दौरान दृढ़ विश्वास की दौड़ को नहीं दौड़े थे; उन्होंने इसका समापन बहुत अच्छे तरीके से किया। प्रेरित प्राचीन जगत की कौमों को बताने के लिए सुसमाचार के प्रचारक बन गए। अन्त में, तरसुस के शाऊल (पौलुस) को उसके अन्तिम प्रेरित के रूप में प्रभु यीशु के द्वारा बुलाया गया (प्रेरितों. 9:1-20; 1 कुरि. 15:1-10), और वह रोमी साम्राज्य में बड़े-बड़े लोगों में सुसमाचार को लेकर गया। अपने जीवन के अन्तिम दिनों में, तीमुथियुस के पत्र में उसने एक कथन दिया जो परमेश्वर के सभी लोगों के उत्साह पर लागू होता है कोई व्यक्ति अपनी प्रतिभाओं की परवाह किए बिना विश्वास की "अच्छी लड़ाई लड़" सकता है और "दौड़" पूरी कर सकता है। परमेश्वर ने अपने प्रेम करने वालों से "अपने प्रकट होने" पर "धार्मिकता का मुकुट" देने की प्रतिज्ञा दी है (2 तीमु. 4:7, 8)।

अब्राहम और उसके वंशज के लिए परमेश्वर की बुलाहट का अन्तिम रूप यीशु मसीह के संसार में आने से पूरी हुई। उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा वह "सुसमाचार के प्रकाश के द्वारा जीवन और अमरता" को लाया (2 तीमु. 1:10) "धरती की सारी कौमों के लिए" आशीष के रूप में। "मसीह यीशु के विश्वास के द्वारा" (गला. 3:26) सारी कौमों के लोग परमेश्वर की सन्तान के रूप में गिने जा सकते हैं। पौलुस आगे चलकर बताता है कि यह कैसे वास्तविक बन सकता है

और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहन

लिया है। अब न कोई यहूदी रहा और न यूनानी; न कोई दास, न स्वतंत्र; न कोई नर, न नारी; क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो। और यदि तुम मसीह के हो, तो अब्राहम के वंश और प्रतिज्ञा के अनुसार वारिस भी हो (गला. 3:27-29)।

समाप्ति नोट्स

[1]जोहन टी. विलिस, *जेनेसिस,* दि लिविंग वर्ड कमैंट्री (ऑस्टिन, टेस्सासः स्वीट पबलिशिंग कम्पनी, 1979), 448. [2]केनेथ ए. मैथ्यूस, *जेनिसिस 11:27-50:26*, द न्यू अमेरिकन कॉमेन्ट्री, वोल. 1बी (नैशविले: ब्रॉडमैन & होलमैन पब्लिशर्स, 2005), 888; एन. 577. [3]पूर्वोक्त। [4]भविष्यद्वक्ता होने से बाइबल का तात्पर्य उस से है जो किसी अन्य के लिए बोले, उसके मुख(पत्र) के समान। मूसा को परमेश्वर का मुखपत्र (भविष्यद्वक्ता) होना था, जो उसके वचन हारून को बताए। हारून को फिर, मूसा का मुखपत्र (भविष्यद्वक्ता) होकर उसके वचनों को लोगों को बताना था (निर्गमन 4:10-16; 7:1, 2)। [5]संज्ञा "यहूदा" "स्तुति" के लिए इब्रानी शब्द से संबंधित है, इसलिए लिया का यह कथन शब्दों का आलंकारिक प्रयोग है। [6]अय्युब ने *ओरेप* को अय्यूब 16:12 में प्रतीकात्मक रीति से प्रयोग किया। उसे लगा कि परमेश्वर उसका शत्रु है, और उसने अपना गला पकड़ कर झकझोर कर "टुकड़े टुकड़े" कर देना का आरोप लगाया। [7]शत्रु के पीठ दिखाकर भागने के संदर्भ में, यही इब्रानी शब्द जो 49:8 में "गर्दन" है उसे "पीठ" भी अनुवाद किया जा सकता है (निर्गमन 23:27; 2 शमूएल 22:41; भजन 18:40)। [8]दाऊद की विजयों को 2 शमूएल 8:1-15 में संक्षिप्त में दिया गया है। [9]49:9 की पंक्तियाँ गिनती 24:9 के समानान्तर हैं। [10]इन चिन्हों को थामे हुए राजाओं के चित्र देखने के लिए, देखिए जेम्स बी. प्रिट्चर्ड, *द एन्शियन्ट नियर ईस्ट इन पिक्चर्स रिलेटिंग टू द ओल्ड टेस्टामेन्ट*, 2ड एड. (प्रिंस्टन, एन.जे., प्रिंस्टन यूनिवर्सिटी प्रेस, 1969), 152 (नो. 441), 153 (नो. 445), 156 (नो. 454), 159 (नो. 463)।

[11]परन्तु, अबशालोम खच्चर पर सवार था जब उसने एप्रैम के जंगल से बचकर भागने का प्रयास किया। उसकी सेना की उसके पिता, दाऊद के सेवकों द्वारा पराजय हो चुकी थी (2 शमूएल 18:6-9)। [12]ब्रूस के. वॉल्टके, *जेनेसिस: अ कॉमेन्ट्री* (ग्रैंड रैपिड्स, मिच.: ज़ोन्डरवैन पबलिशर्स, 2001), 609, एन. 197. [13]देखें नीतिवचन 23:29-33, जो कहती है कि अत्याधिक दाखमधु पीने से व्यक्ति को "विचित्र वस्तुएं" दिखाई देती हैं। [14]मैथ्यूस, 897. [15]"निकट" इस पूर्वसर्ग का अतिरिक्त अर्थ है। (फ्रांसिस ब्राउन, एस. आर. ड्राइवर, एन्ड चार्ल्स ए. ब्रिग्स, *ए हीब्रयू एण्ड इंगलिश लेक्सिकॉन ऑफ द ओल्ड टेस्टामेन्ट* [ऑक्सफोर्ड: क्लैरेन्डॉन प्रेस, 1962], 511.) [16]विलिस, 452. [17]गॉर्डन जे. वेनहैम, *जेनिसिस 16-50*, वर्ड बिबलिकल कॉमेन्ट्री, वोल. 2 (डैलस: वर्ड बुक्स, 1994), 481. [18]पूर्वोक्त। [19]डबल्यू. एफ़. ऑलब्राइट, ट्रान्स., "द मोआबाइट स्टोन," *एन्शियन्ट नियर ईस्टर्न टेक्सस्ट्स रिलेटिंग टू द ओल्ड टेस्टामेंट* में, 3ड एड., एड. जेम्स बी. प्रिट्चर्ड (प्रिन्सटन, एन.जे.: प्रिन्सटन यूनिवर्सिटी प्रेस, 1969), 320. [20]विक्टर पी. हैमिल्टन, *द बुक ऑफ़ जेनिसिस: चौप्टर्स 18-50*, द न्यू इन्टरनैशनल कॉमेन्ट्री ऑन द न्यू टेस्टामेन्ट (ग्रैंड रैपिड्स, मिच.: वम. बी. ईर्डमैन्स पबलिशिंग को., 1995), 676-77.

[21]मैथ्यूस, 903, न. 630. [22]याकूब की सबसे मनपसंद पत्नी, राहेल को निश्चित ही मकपेला की गुफ़ा में दफ़नाया नहीं गया था, क्योंकि 35:16-20 के अनुसार, वह मर गई और बेतेल और बेतलेहम के बीच कही पर दफ़नायी गयी। [23]जॉन डी. लेवेंसों, "जेनेसिस," इन *द जेविश स्टडी बाइबल*, एड. अदेले बर्लिन एंड मार्क ज्वी ब्रेत्त्लेर (न्यू यॉर्क: ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2004), 97; रोनाल्ड यौन्ब्लूद, नोट्स ऑन जेनेसिस, इन *द NIV स्टडी बाइबल*, एड. केनेथ बार्कर (ग्रैंड रैपिड्स, मीच.: जोंदेर्वन पब्लिशिंग हाउस, 1985), 79. [24]"तर्गुम ऑफ ओंकेलोस," इन *द तर्गुम्स ऑफ ओंकेलोस एंड जोनाथन बने उज्ज़ेल ऑन द पेंतातयूच*, ट्रांस. जे. डब्ल्यु. एथरिड्ज (न्यू यॉर्क:

KTAV पब्लिशिंग हाउस, 1968), 152. [25]मिल्लर बॉरोज, *मोर लाइट ऑन द डेड सी स्क्रोल्स* (न्यू यॉर्क: वाइकिंग प्रेस, 1958), 401. [26]विल्लिस, 451. [27]800 ई. तक इब्रानी में स्वर बिन्दुए जोड़े नहीं गए थे, और यहूदी विशेषज्ञ उस शब्द को पूरा करने के लिए हमेशा सही स्वर को नहीं जोड़ते थे, जो कि वास्तव में कहना चाहते थे। [28]यशायाह 18:7 में समानन्तर मूल पाठ का अर्थ उस प्रशंसा से है जो "सेनाओ के यहोवा" के लिए राजा हिजकिय्याह को दिया जाएगा। [29]फ्लोरेंतिनो गार्सिया मार्तिनेज़, *द डेड सी स्क्रोल्स ट्रांसलेटेड: द कुमरन टेक्स्ट्स इन इंग्लिश,* ट्रांस. विल्फ्रेड G. E. वाटसन, दूसरा संस्करण (ग्रैंड रैपिड्स, मीच.: अर्डमन्स पब्लिशिंग कं, 1996), 215 (कोल. 5)। [30]इब्रानी में, शब्द का अर्थ है एक "अभिषिक्त व्यक्ति" *(मसीहा)*। जबकि सभी याजक, जो हारून की संतान थे, और सभी राजा, जो दाऊद की संतान थे, अभिषिक्त थे, एक तरह से, वे सभी परमेश्वर के मसीहा थे। किन्तु, दाऊद के अधिकतम जीवन में, वह पुराने नियम में आदर्श अभिषिक्त (मसीहा) राजा के रूप में खड़े रहे; और वह मसीह का एक प्रकार बन गए। जब यीशु अपनी व्यक्तिगत सेवकाई को शुरू करने के लिए तैयार थे, तो जब उनका बपतिस्मा हुआ, तब उस समय पवित्र आत्मा के द्वारा उनका अभिषेक हुआ (यूहन्ना 1:32-34; प्रेरितों 10:38)। जल्द ही वह वह स्वर्ग में चले गए और दाऊद के सिंहासन पर जा बैठे और उन्होंने अधिकारी रूप से अपनी मसीहा के राज्य की शुरुवात की, प्रभु और "मसीह" (ὁ χριστός, *हो क्रीस्तोस,* "मसीहा," या "अभिषिक्त") के रूप में (प्रेरितों. 2:29-36)। यीशु दाऊद का सबसे महान वंशज है और वह अब वह अपने अनंत आत्मिक राज्य पर शासन करता है (यूहन्ना 18:36, 37; कुलु. 1:12-14; इब्रा. 12:22-24, 28, 29) महानतम "सिंह के रूप में जो यहूदा के गोत्र से है, दाऊद का वंश" (प्रका. 5:5)।

[31]शब्द "अनंतकाल" या "सर्वदा" עוֹלָם *(ओलम)* का अर्थ केवल "अनंत" या "अनंतकाल" है, जब इसका मतलब परमेश्वर या उनके गुणों से सम्बंधित होता है। शब्द का मूलभूत अर्थ है "बना रहेनेवाला युग," जो एक लम्बा या छोटा समय हो सकता है, सन्दर्भ के आधार पर (1 शमूएल 1:11, 22-24, 28; योना 1:17; 2:6)। [32]टैसिटस *एग्रीकोला* 30. [33]लड़कियों की विरासत के लिए मूसा की व्यवस्था में इस नियम के लिए अपवाद बनाए गए थे, यदि उनके कोई भाई नहीं होता था (गिनती 27:1-11)। [34]इब्रानी भाषा शाब्दिक रूप से कहती है, "आशीष बनो।" [35]"सालेम" नगर के लिए आरम्भ में दी गई उपाधि दी जिसको बाद में "यरूशलेम" का नाम दिया गया (भजन 76:2)। [36]गूढ़-ज्ञान पूर्व मतान्तर था जिसने पहली शताब्दी में कुछ कलीसियाओं को परेशान कर दिया था। कुछ गूढ़ ज्ञानी यीशु के वास्तविक मानव देहधारण का इनकार करते थे, जबकि अन्य शब्दों में वे प्रभु यीशु के ईश्वरीयत्व का इनकार करते थे।